Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

ण य संखयमाहु जीवियं।

टूटे हुए जीवन को साधा नहीं जा सकता।

सद्दहसू अदक्खुदंसणा।

हे अर्वाग्दर्शी! तुम द्रष्टा वचन पर श्रद्धा करो।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 21 • 28 फरवरी - 6 मार्च, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 26-02-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

संयम जीवन की शुभारंभ भूमि पर संयम जीवन की रजत जयंती का मंगल संयोग

सेवा में समर्पित व्यक्तियों का धर्मसंघ में होना बड़ी बात : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, १४ फरवरी, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ और वीर भूमि बीदासर का ऐतिहासिक संबंध है। अनेकों इतिहासों की साक्षी बीदासर की वीर भूमि पर माघ शुक्ल त्रयोदशी की सुबह एक ओर नव इतिहास का सृजन हुआ। २५ वर्ष पूर्व हेम द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर आज के दिन पाँच साधु, नौ साध्वी और तीन समणी सहित कुल १७ लोगों ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी से संयम रूपी रतन ग्रहण किया था। परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में १७ में से १० की उपस्थिति में उनके संयम पर्याय के २५ वर्षों की संपन्नता पर समारोह मनाया गया। आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि और अपने दीक्षा स्थल पर दीक्षा की रजत जयंती का अवसर पाकर सभी अपने आपको आह्लादित और गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि आत्मा ही सुखों की, दुखों की कर्ता और विकर्ता है। आत्मा मित्र भी बन जाती है और आत्मा अमित्र भी बन जाती है। दुष्प्रवृत्ति में संलग्न आत्मा अमित्र बन जाती है। सुप्रतिष्ठित अच्छी दिशा और सद्-प्रवृत्ति में संलग्न आत्मा हमारी मित्र बन जाती है।

संयम जीवन ग्रहण करना, चारित्र को अभिगृहीत करना और उसका पालन भी करना यह अपनी आत्मा का मित्र बनना होता है। आज से २५ वर्ष पूर्व इसी बीदासर क्षेत्र में परमपूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में हेम दीक्षा द्वि-शताब्दी का कार्यक्रम हुआ। यह तेरापंथ की एक विरल घटना थी। अद्वितीय कार्यक्रम था। इससे हेमराज जी स्वामी सिरियारी वालों का महिमा मंडन भी होता है। उनकी दीक्षा के बाद हमारे धर्मसंघ में दीक्षा वृद्धि वर्धमान हुई थी।

आज मुनि हेमराजजी की दीक्षा के २२५ वर्ष हो रहे हैं। मैं मुनि हेमराजजी स्वामी का स्मरण करता हूँ। हमारे धर्मसंघ को ऐसे महान व्यक्तित्व प्राप्त हुए। उनकी दीक्षा का कार्यक्रम दीक्षा के कार्यक्रम से मनाया गया। गुरुदेव तुलसी ने उनको शासन महास्तंभ के नाम से अलंकृत किया था। २५ वर्ष पहले यहीं दीक्षा कार्यक्रम आयोजित हुआ था। २५ वर्षों बाद उसी स्थान पर दीक्षा दिवस मनाने का अवसर आए यह हर किसी को मौका नहीं मिलता। दस ऐसे साधु-साध्वी, समणी हैं, जिनका धवल समारोह दीक्षा भूमि में ही उपक्रम आया है।

गुरुदेव तुलसी से अलग आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने दीक्षा समारोह का आयोजन किया था। मैं तो आचार्यश्री के साथ था ही नहीं। हमारे धर्मसंघ में कई छोटी उम्र के दीक्षार्थी दीक्षित होते हैं और अपनी कार्यशक्ति से मोटे-मोटे से बन जाते हैं। धर्मसंघ हमारा आसरा है, जहाँ हमारा लालन-पालन होता है।

आज कई चारित्रात्माएँ बहिर्विहार में भी है, जहाँ भी हो हम सब निकट ही हैं।

हमारे धर्मसंघ का सौभाग्य है कि जहाँ चारित्रात्माएँ और समणियाँ दीक्षित हो रहे हैं। वे भी धर्मसंघ के अंग हैं। वे भी करने वाले कितनी सेवा करते हैं। शिक्षा के द्वारा भी प्रगति कर लेते हैं। धर्मसंघ में अच्छे कार्यकारी बन जाते हैं। जब भी याद कर लो, तत्परता से दौड़कर आ जाते हैं। जो कार्य सौंपा जाता है, कार्य संपन्न भी करते हैं।

विज्ञप्ति का कार्य हो या बड़ी-बड़ी संस्थाओं को संभालना कितनी सेवा करते हैं। विहार में भी कितना सहयोग करते हैं। बहिर्विहारी साधु-साध्वियाँ भी कितनी जवाबदारी से ध्यान देकर सेवा करते हैं। भेंटणा भी कितना लेकर आती है, वो भी संघ की सेवा ही है। उनकी कितनी भावना-भक्ति रहती है। सेवा की भावना रहती है। समणियाँ भी न्यारा में काम करती हैं।

कोई घटना भी घट जाती है, तो भी कितना मनोबल रखते हैं। धर्मसंघ के अंग बनकर रहना भी जीवन के लिए अच्छी बात होती है। आज जिनकी दीक्षा की २५ वर्ष की संपूर्णता है, उनसे कितना आश्वासन मिलता है। मनोबल के साथ व्यवस्थाओं को संभाल लेते हैं। ऐसे व्यक्ति जिनके पास दिमाग भी है, मनोबल भी है और कार्य करने का तरीका भी है। कार्य करते-करते कुशलता को प्राप्त कर लिया है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

संसार के सैकड़ों रत्नों से भी कीमती है संयम रूपी रत्न : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, १३ फरवरी, २०२२

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी थोड़े के लिए बहुत को खो देता है, तो वह उसकी असमीचीनता हो जाती है। बुद्धिमत्ता इसमें है कि लाभ थोड़ा-नुकसान ज्यादा वैसा काम नहीं करना। परंतु मोह का ऐसा प्रभाव होता है कि आदमी नुकसान को भी चाहे, अनचाहे स्वीकार कर लेता है। नुकसान भी ज्यादा मात्रा वाला परंतु तात्कालिक रूप में लाभ लगता है, तो उसके लिए आदमी वैसा कार्य भी कर लेता है, जो आगे नुकसान देने वाला होता है।

जैसे पैसे के लोभ में आकर ईमानदारी छोड़ देता है। ईमानदारी को पैसे के लिए न छोड़ना बुद्धिमत्ता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि थोड़े लाभ के लिए ज्यादा न खोएँ। धर्म की दृष्टि से, आत्मा की दृष्टि से देखें कि हमसे कोई बड़ा पाप न हो। हम चारित्रात्माओं के लिए ये संयम जीवन संयम रत्न है, वो कभी छूट न जाए। महाव्रत बहुत सुख देने वाले हैं। उनको जो नष्ट कर सुख पाना चाहता है, वो कीमती रत्न खो देता है। ऐसी भूल जीवन में न हो। संसार के सैकड़ों कीमती रत्नों के सामने संयम रत्न बड़ा कीमती है। साधुपन के सामने दूसरे रत्न कुछ नहीं है। संयम रत्न कभी न जाए।

जो धृति बल से दुर्बल है, वो थोड़े से सांसारिक सुखों के लिए संयम रत्न खो देता है। एक प्रसंग से समझाया कि हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है। मनुष्य जीवन अपने आपमें बहुत कीमती है। इसको नहीं खोना।

चारित्रात्माएँ हैं, संयम रत्न है, वो कितना अमूल्य है। कौआ उड़ाने के लिए चिंतामणी रत्न को फैंक दें, उसे क्या कहें? छोटी-मोटी बात के लिए संयम रूपी रत्न को खो देने वाला दयनीय आदमी है।

साधु है और निदान कर ले कि मेरी संयम साधना का फल हो तो मैं आगे के जीवन में चक्रवर्ती या वासुदेव बन जाऊँ। तो कहाँ संयम का फल और कहाँ यह तुच्छ समृद्धि। यह भी थोड़े के लिए बहुत को खोना हो गया। निदान भी चूल है, हो गया तो आलोयणा-प्रतिक्रमण कर लो। आलोयणा नहीं की तो बड़ा नुकसान हो सकता है।

श्रावक के भी व्रत-नियम लिए हुए हैं, उनमें दोष लगा दे या पालना छोड़ दे, वो भी एक प्रमाद है। लिए हुए त्याग-नियम न छोड़ें। धर्म की दृष्टि से बड़ा लाभ मिले ऐसा हमारा कार्य होना चाहिए, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में साध्वी जगवत्सलाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

एकता सुराणा, सरोज बांठिया व बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 फरवरी - 6 मार्च, 2022

✦ *यदि जीवन में शांति और सुख है तो धरती पर ही स्वर्ग उतर आता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साधु जीवन संवर और निर्जरा का समवाय होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, १६ फरवरी, २०२२

माघ शुक्ला पूर्णिमा आज से ५० वर्ष पूर्व गंगाशहर में पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी के करकमलों द्वारा छः मुमुक्षुओं, दो भाई और चार बहनों की दीक्षाएँ हुई थीं। मुनि कमल कुमार जी, मुनि श्रेयांस कुमार जी एवं साध्वी सुषमाश्री जी वर्तमान में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। 'तपोमूर्ति उग्रविहारी' मुनि कमल कुमार जी पूज्यप्रवर की सन्निधि में अपना ५१वाँ दीक्षा दिवस मना रहे हैं।

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हम मनुष्य हैं, मनुष्य का जन्म दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण भी माना गया है। हमारे जीवन में दो तत्त्व हैं—आत्मा व शरीर। सिद्धांत कहता है कि आत्मा तो स्थायी-शाश्वत है। परंतु शरीर अस्थायी, अशाश्वत होता है।

हम शरीर को पाल-पोषकर इसकी सुरक्षा भी करते हैं। प्रश्न उठ सकता है कि शरीर पर इतना ध्यान क्यों दें। क्यों इसकी सार-संभाल करें। आखिर तो एक दिन नष्ट होने वाला है। पूर्व कार्यों का क्षय करने के लिए इस शरीर का ध्यान रखना चाहिए। इस शरीर का उपयोग हम अध्यात्म की साधना में और पूर्व कर्मों का क्षय करने में करें।

संवर भी करें साथ में निर्जरा भी करें तो नए कर्म बंधेंगे नहीं, पूर्व कर्म समीचीनतया संपन्न हो सकते हैं। साधु जीवन ग्रहण करना, उसमें संवर भी आता है, साथ में शुभ योग से निर्जरा भी होती है। साधु जीवन संवर और निर्जरा दोनों का समवाय होता है।

आज के दिन ठीक ५० वर्ष पूर्व वि०सं० २०२८ की माघ पूर्णिमा के दिन हमारे धर्मसंघ में अनेक व्यक्ति दीक्षित हुए थे। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने इन्हें दीक्षित किया था। संयम जीवन को स्वीकार करना, ५० वर्षों तक उसका पालन करना एक बड़ी उपलब्धि हो जाती है। अर्ध शताब्दी

संयम जीवन की जिसे स्वर्ण जयंती कहते हैं, उससे हम यह शिक्षा लें कि जैसे स्वर्ण में निर्मलता होती है, पचास वर्षों के संयम परिपालन से आत्मा रूपी तत्त्व में सोने की तरह निखार आ जाए, आगे के और पच्चीस वर्षों में और निखार आ जाए।

सौ वर्ष का संयम पर्याय वाला तो आज तक धर्मसंघ में कोई हुआ नहीं है। सौ वर्षों का जीवन काल तो साध्वी बिदामाजी ने प्राप्त कर लिया है। हमारे धर्मसंघ की पहली चारित्रात्मा है। भगवान महावीर से लेकर अब तक जैन शासन में संयम पर्याय सौ पार हो, ऐसा अभी तक तो जानकारी में नहीं आया है। ७५ वर्ष का संयम पर्याय तो हमारे धर्मसंघ में भी चारित्रात्माओं ने प्राप्त किया है।

जो चारित्रात्मा तपस्या करती है, तपोमूर्ति के रूप में सामने आ जाती है, कितने लंबे समय से वर्षीतप चल रहा है। एक दिन न खाना भी हर किसी के लिए मुश्किल बात हो सकती है, वो भी वर्षों तक वर्षीतप करना विरल-विशेष बात हो सकती है। साथ में उग्र-उग्र-लंबे-लंबे विहार करना। बहुत कम मिलने वाला प्रसंग है।

जिस चारित्रात्मा में व्याख्यान की भी एक भावना बनी रहती है, कहने की अपेक्षा नहीं। जहाँ उपयोगिता है, वहाँ व्याख्यान दे देना। गुरुधारणा कराना, संभाल करना, धर्म का विकास हो यही भावना रहना, विशेष बात है। बिना काशीद के यात्रा हो रही है, यह असाधारण सी बात हो सकती है। संयम की बात है।

मुस्लिम भाई भी आए हैं। जीवन में आदमी के सादगी, सद्भावना और मैत्री हो। कार्य में ईमानदारी हो। नशामुक्ति हो। ऐसा जीवन होता है, तो जीवन बढ़िया है। आगे के लिए भी अच्छी बात हो सकती है। अहिंसा यात्रा में जैन धर्म के साथ जनधर्म की बातें हम बताया करते हैं। आत्मा अच्छी बने। इंसान पहले इंसान फिर हिंदू या मुसलमान।

यह धर्म की बात है कि सबसे मैत्री भाव रखें। अहिंसा परम धर्म है। पाँच महाव्रतों और छठे रात्रि भोजन विरमण व्रत को स्वीकार करने वाले चारित्रात्माएँ होते हैं, उनका संयम-तप का जीवन हो जाता है। गुरु के प्रति समर्पण का भाव रहता है। ये निष्ठा की बात होती है। विनय की भावना, शासन के प्रति भावना और बात-बात में जिनके प्रमोद भावना है। छोटे संतों के प्रति भी अच्छा भाव हो।

न्यारा में साधु-साध्वियाँ हैं, जिन्हें दीक्षा के ५० वर्ष हो गए हैं, वे भी अच्छी सेवा कर रहे। न्यारा में रहो या भेला में रहो, शासन के बनकर रहो वह खास बात है। आत्मा के बनकर के रहें। ५० वर्षों का संयम पर्याय मिलना अच्छी बात है। जब तक आदमी रहे, अच्छे काम करते रहें। सबके प्रति खूब मंगलकामनाएँ हैं। खूब अच्छी धर्मसंघ की सेवा करते रहें। पूज्यप्रवर ने उनके लिए मंगलपाठ की भी कृपा करवाई।

प्रवचन के पश्चात मुनि कमल कुमार जी के ५१वें दीक्षा दिवस पर मुनिवृंदों द्वारा मंगलकामना का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें अनेक मुनियों द्वारा गीत और शुभकामनाएँ संप्रेषित की गई।

मुनि कमल कमार जी स्वामी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति पूज्यप्रवर के चरणों में दी। चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुतियाँ हुई।

बीदासर, शहर के मुस्लिम समाज के प्रतिनिधियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। मुस्लिम समाज द्वारा पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सभी लोगों में धार्मिक भावना, सद्भावना और नैतिकता-नशामुक्ति के संस्कार रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

चाड़वास, १८ फरवरी, २०२२

वीतरागता की प्रतिमूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी वीरभूमि बीदासर में 'वृहद् मर्यादा महोत्सव सहित १५ दिवसीय पावन प्रवास संपन्न कर ज्यों ही विहार किया बीदासरवासी अपने आराध्य को विदा करने के साथ ही चल पड़े। आचार्यप्रवर अपनी धवल सेना के साथ १२ किलोमीटर विहार कर चाड़वास के तेरापंथ भवन पधारे।

वीतराग तुल्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी पंचेन्द्रिय प्राणी होता है। पंचेन्द्रिय प्राणी वही होता है, जिसके पास श्रवण का साधन होता है। श्रोतेन्द्रिय होती है। श्रवण शक्ति का मिलना इस बात का भी द्योतक है, कि शेष चार इंद्रियाँ तो उसके हैं, ही।

आदमी बुरा बोले नहीं, बुरा देख नहीं, बुरा सुने नहीं और बुरा सोचे नहीं। दूसरों की निंदा व स्वयं की प्रशंसा सुनने में भी रस नहीं लेना चाहिए।

शास्त्रकार ने कहा है कि आदमी सुनकर कल्याण को जान लेता है। सुनकर आदमी पाप-बुरी चीज को भी जान लेता है। जान लेने से ज्ञान हो जाता है कि अच्छा क्या है? बुरा क्या है? दोनों को जानकर आदमी जो अच्छा है, उसका अपने जीवन में आचरण करे। आँखों से पढ़कर भी ज्ञान किया जा सकता है। कितने ग्रंथ आज उपलब्ध हैं। पर जब ग्रंथ नहीं थे तो गुरु से सुनकर ज्ञान ग्रहण किया जाता था। आँख भी एक सशक्त माध्यम है—ज्ञान प्राप्त करने का।

वर्तमान में कान और आँख दोनों ज्ञान प्राप्ति के स्रोत हैं। सुनना ज्यादा चाहिए, बोलना कम चाहिए। कान दो मिले हैं मुँह एक ही मिला है। सुनने में भी धैर्य अपेक्षित होता है। आदमी सुनकर इतनी बातें जान लेता है, पर हर बात को मुँह से नहीं निकालना चाहिए। आदमी का सारा कानों से सुना हुआ, आँखों से देखा हुआ, वापस कहने के लायक नहीं होता है। कहने की बात कही जा सकती है, बाकी बातों को भीतर में पचाकर रखना चाहिए। यह आचार्य भिक्षु के एक दृष्टांत से समझाया कि हर बात को बताना उचित या अपेक्षित नहीं हो सकता है।

अच्छा बोलने वाला हो तो, अच्छा सुनने को मिले। हम लोग आज वापस चाड़वास आए हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तो चाड़वास में मर्यादा महोत्सव भी किया था। चाड़वास छोटा गाँव होते हुए भी श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है। मुनि सोहनलाल जी तो चाड़वास से थे ही, मैं उनके पास रहा हुआ हूँ। बोलने वाले में भाषण की शक्ति हो, सुनने वाले में श्रवण की शक्ति हो तब कुछ ज्ञान प्राप्त हो सकता है। सुनने वाला एकाग्र और जागरूक हो तो बात पकड़ी जा सकती है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

साधनों से सुविधा मिल सकती है परंतु शांति तो संयम से मिलती है : आचार्यश्री महाश्रमण

आबसर, १६ फरवरी, २०२२

जन-जन को कल्याण का मार्ग दिखाने वाले जगत कल्याणक आचार्यश्री महाश्रमण जी १६ किलोमीटर का विहार कर आबसर स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे।

विद्यालय परिसर में अध्यात्म के महासागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी शांति से जीना चाहता है। प्रश्न है—जीवन में शांति कैसे रह सकती है? दो चीजें हैं, एक है—शांति। दूसरी है—सुविधा। शांति का संबंध ज्यादा हमारे भीतर से है। सुविधा बाहर से मिलती है।

बाह्य साधनों से सुविधा मिल सकती है, पर शांति नहीं। शांति साधना से मिलती है। अध्यात्म की साधना से मानसिक शांति प्राप्त होती है। धर्म के द्वारा शांति प्रदान की जा सकती है। सुविधा मिल जाए ये जरूरी नहीं। सुविधा न मिलने पर भी साधु बड़ी शांति में रह सकता है। आत्मिक आनंद में रह सकता है। वो आनंद गृहस्थों को नहीं मिल सकता यह एक दृष्टांत से समझाया कि कठोर जीवन फिर भी शांति, ऐसा कैसे?

प्रसन्नता-शांति तो भीतर से होती है वो तपस्या-त्याग से प्राप्त होती है। साधु को कल की चिंता नहीं। साधु के त्याग है, वे वर्तमान में जीना जानते हैं। न अतीत का भार न भविष्य की चिंता। संतोष-संयम का जीवन जीने वाले हैं। साधनों से सुविधा मिल सकती है। शांति तो त्याग-संयम से मिल सकती है।

बच्चों में भी अच्छे संस्कार आ जाएँ। जीवन में ईमानदारी, मैत्री, अहिंसा, नैतिकता, विनम्रता ऐसे संस्कार जीवन में आ जाएँ तो बच्चे अच्छे बन सकते हैं। नशा नहीं करना। सादगी का जीवन शांति से जी सकते हैं। गृहस्थ के जीवन में भी संयम-सादगी हो। बच्चों को स्कूल में अनेक विषयों के साथ अध्यात्म की विद्या-शिक्षा भी मिले। जीवन अच्छा जी सकें वो शिक्षा मिले।

प्रयास करने से सफलता मिल सकती है। ज्ञान भी अच्छा हो तो बच्चों का जीवन अच्छा हो सकता है। हम लोग अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्यों को समझाकर स्थानीय लोगों व स्कूल के विद्यार्थियों को स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय भागीरथ, गिरधारी, तिलोक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने स्कूल के विद्यार्थियों को समझाया कि सत्संग का कितना महत्त्व है।

जीवन-विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

सायन-कोलीवाड़ा (मुंबई)।

अणुव्रत समिति, मुंबई के स्थायी प्रकल्प अहिंसा एवं रोजगार प्रशिक्षण के अंतर्गत हनुमान टेकड़ी सायन कोलीवाड़ा में जीवन-विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र संयोजिका मधु मेहता व सह-संयोजिका कामिनी बड़ाला ने वर्कशॉप को सुचारु रूप से चलाया। सबसे पहले बच्चों को महाप्राण ध्वनि कराई गई, जिससे बच्चों को एकाग्रता व जागरूकता के साथ वर्कशॉप का प्रारंभ किया गया। अणुव्रत गीत से वर्कशॉप की शुरुआत की गई।

बच्चों को जीवन-विज्ञान की पुस्तक वितरित करवाई गई। बच्चों को श्वास जीवन की मुख्य आवश्यकता है उसके बारे में बताया गया और श्वास कैसे लेना चाहिए उसके बारे में जानकारी देते हुए दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया।

'हाउ टू इन्क्रीज योर मैमोरी' को बताते हुए महाप्रयाण ध्वनि व शशांक आसन का प्रयोग कराया गया, उनके लाभ व जीवन में उनकी उपयोगिता के बारे में बताया गया। प्रशिक्षिका लता का सहयोग प्राप्त हुआ।

आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

साउथ हावड़ा।

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी स्वर्णरेखजी के सान्निध्य में किशोर मंडल द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रतियोगियों ने अपना नाम लिखवाया। जज द्वारा १० प्रतियोगियों का चयन कर आगे के कार्यक्रम के लिए चयनित किया। चयनित प्रतियोगियों को अलग-अलग विषय दिए गए, जिसमें उनको अपने मन की बात उस विषय के बारे में बोलनी थी।

कार्यक्रम में तेयुप सहित किशोर मंडल की अच्छी उपस्थिति रही। इस प्रतियोगिता में तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुशील गिड़िया, टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सुशील चोरड़िया ने जज की भूमिका निभाई। सभी विजयताओं को पुरस्कृत किया गया। जिसमें प्रथम हेमलता बेगवानी, द्वितीय शशि नाहर, तृतीय बीना जैन और स्नेहा डागा रहे। कार्यक्रम के सफल बनाने हेतु संयोजक संयोग कुमार पारख, साहिल नाहर, सह-संयोजक अभिषेक चोरड़िया सहित पीयूष दुगड़, आशीष बैद का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में बुधमल लुनिया, अध्यक्ष कोलकाता सभा, अजय भंसाली, मंत्री कोलकाता सभा, राकेश संचेती, अध्यक्ष उत्तर हावड़ा सभा, अशोक कोठारी, न्यासी साउथ हावड़ा सभा ट्रस्टी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सेवा में समर्पित व्यक्तियों का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सेवा के अनेक रूप है। दिमाग से व्यवस्थाओं में सहयोग देने का श्रम करते हैं। योजना के साथ कार्य संपन्न करते हैं। सेवा में तारतम्य रह सकता है। सबमें समर्पण का भाव रहे। कोई काम हो, दूसरों के लिए आश्वासन बने रहते हैं। ऐसे सेवा करने वालों को बार-बार धन्यवाद मिलना चाहिए कि कैसे विकट स्थिति में भी सेवा देते हैं। हर समस्या को सुलझा देते हैं या समस्या को लेकर ही आ जाते हैं। ऐसे व्यक्ति धर्मसंघ में होते हैं, तो धर्मसंघ के लिए बड़ी बात हो जाती है।

ये संयम जीवन है। २५ वर्ष की संपन्नता पर अपना आकलन भी किया जा सकता है। कि २५ वर्ष कैसे बीते? कोई परदोष तो नहीं लगा है, लगा है तो प्रायश्चित के द्वारा शुद्धि कर लें, २५ वर्ष में मैंने आगम कितने पढ़े? जो दूसरे कामों में लगे हैं, वो तो वो ही काम करते रहें। स्वाध्याय अच्छी चीज है, पर जहाँ सेवा की प्रधानता है, वहाँ स्वाध्याय को भी गौण कर दो। सेवा को प्रथम स्थान दो। आगे के और जो वर्ष मिले संयम पर्याय की निर्मलता के वर्ष बने और साधना आगे बढ़े।

संयम रत्न देने वाला कोई भी हो, संयम रत्न मिलना खास बात है। संयम रत्न की सुरक्षा रहे, संघ-निष्ठा रहे। अच्छी साधना करें, संघ की जितनी हो सके अच्छी सेवा करें। जितना बल है, उसका अच्छा प्रयोग करें। जो स्वभाव से शांत है, सेवा करने वाले हैं बहुत अच्छी बात है। हमारा संयम-पर्याय निर्मल रहे, समणी आचार का भी अच्छा पालन करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी आज यहाँ नहीं हैं, २५ वर्ष पहले भी मूल कार्यक्रम में नहीं थी। उनका स्वास्थ्य अनुकूल-अच्छा रहे। यह हमारी मंगलकामना है। न्यारा वाले भी रीढ़ की हड्डी की तरह संघ सेवा करते हैं। मैं सबके प्रति मंगलकामना करता हूँ। सभी अपने-अपने पर्याय से शासन की सुषमा को बढ़ाते रहें।

पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में संयम यात्रा के २५ वर्ष पूर्ण करने वाले मुनि विश्रुतकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि अक्षयकुमारजी, मुनि देवार्यकुमार जी, साध्वी मलयश्रीजी, साध्वी चैत्यप्रभाजी, साध्वी सौरभयशाजी, साध्वी मुदितयशाजी, साध्वी ललितयशाजी, समणी पावनप्रज्ञा जी ने अपने-अपने जीवन के संस्मरणों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संस्कार निर्माण शिविर

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में ४ घंटों का ज्ञानशाला के बच्चों का शिविर लगाया गया। शिविर का प्रारंभ मुनिश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात ज्ञानशाला की संयोजिका नयनतारा सुखाणी ने सभी का अभिवादन व स्वागत किया। प्रेमलता सेठिया ने बच्चों को गीत का उच्चारण करवाया। मुनि कुणाल कुमार जी ने ज्ञानशाला पर गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात मुनि जिनेश कुमार जी ने अपने प्रवचन में ज्ञानशाला के बच्चों को पाँच मुख्य सूत्र बताए—विनय, सहनशीलता, जागरूकता, स्वस्थता, श्रद्धाशीलता। इन पाँच सूत्रों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

कन्या मंडल ने ज्ञानशाला के बच्चों को ज्ञानवर्धन व मेमोरी गेम खिलाए। इन प्रतियोगिताओं में विजेता आने वाले बच्चों को कंसोलेशन प्राइज विनीता दुधोड़िया के द्वारा वितरित किए गए। बच्चों को ललिता सुराणा व सभा द्वारा पारितोषिक वितरण किए। बच्चों को आचार्यश्री तुलसी के जीवन पर एक डोक्यूमेंट्री दिखाई गई।

इस शिविर में ३६ बच्चों ने भाग लिया। शिविर के समापन के समय मुनिश्री ने बच्चों को ज्ञानवर्धक बातें बताई। सभा अध्यक्ष बच्छराज बैताला ने सभी का धन्यवाद व मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। ज्ञानशाला सहयोगी जितेंद्र बैद ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया व मुनिश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। इस शिविर में ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ और कन्या मंडल भी उपस्थित रही।

सभी लोगों में धार्मिक भावना, सद्भावना और...

(पृष्ठ २ का शेष)

अच्छी बात सुनकर उसे आचरण में लें आएँ तो और लाभ हो सकता है, तत्त्व-बोध का माध्यम श्रुति होती है। हेय-उपादेय का बोध हो सकता है। आगे बढ़ते-बढ़ते निर्वाण-मोक्ष को प्राप्त हो सकता है। चाड़वास तपोभूमि है। कितनी चारित्रात्माओं का प्रवास हुआ है। चाड़वास की जनता जैन-अजैन जो भी है, सभी लोगों में धार्मिक भावना, सद्भावना और नैतिकता-नशामुक्ति के संस्कार रहें। पूज्यप्रवर ने छापर चतुर्मास के अंतर्गत एक दिन का प्रवास चाड़वास के लिए फरमाया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, चाड़वास के अध्यक्ष जुगराज भंडारी, उपाध्यक्ष अशोक दुगड़, महासभा और जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया, तेयुप के सह-अध्यक्ष विक्रम भंडारी, महिला मंडल की अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया, मोनिका चोरड़िया, छत्रसिंह बच्छावत व कल्पना बच्छावत ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। बादरमल सेठिया, संजय भटेरा, काव्या चोरड़िया, अनिता बैद, तेरापंथ महिला मंडल तथा तेरापंथ कन्या मंडल ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। चाड़वास ग्राम पंचायत सरपंच प्रतिनिधि रामदेव गोदारा ने चाड़वास की जनता की ओर से आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत-अभिनंदन किया। चाड़वासवासियों की पुरजोर प्रार्थना पर आचार्यश्री ने विशेष कृपा करते हुए छापर चतुर्मास के दौरान एक दिन का प्रवास तथा प्रवचन कार्यक्रम चाड़वास में करने की घोषणा की तो चाड़वासवासियों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। पूरा प्रवचन पंडाल जयघोष से गुंजायमान हो उठा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 फरवरी - 6 मार्च, 2022

✦ *आत्मा अपने कृतकर्मों के कारण अनादिकाल से एक गति से दूसरी गति में परिभ्रमण करती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

आओ चलें गाँव की ओर

देवत गाँव।

अभातेममं द्वारा निर्देशित पर्वत पाटिया महिला मंडल द्वारा 'आओ चलें गाँव की ओर' योजना के अंतर्गत देवत गाँव में सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व अध्यक्ष मनोज देवी गंग ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया। उसके पश्चात सभी बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। सभी बहनों व बच्चों का स्वागत अध्यक्ष ललिता ने किया। निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम देवी बोथरा ने स्वच्छता पर प्रशिक्षण दिया। देवत गाँव में रहने वाले २५ परिवारों की महिलाओं को स्वेटर एवं साड़ी महिला मंडल की बहनों द्वारा दी गई सभी बच्चों एवं महिलाओं को खमण जलेबी एवं संतरा वितरण किया गया।

इस कार्यक्रम में परामर्शक कंचन देवी, कोषाध्यक्ष अंजू धाकड़, सहमंत्री चेष्टा कदम, आलिया, शांति देवी बुच्चा और रवीना मेहता आदि महिला मंडल की बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। आसपास की बस्ती में भी बिस्किट व संतरे वितरित किए गए।

अमृत महोत्सव कथानक दृश्यांकन

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं एवं कन्या मंडल द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में कथानक दृश्यांकन का आयोजन किया गया।

कथानक दृश्यांकन के लिए अभातेममं द्वारा निर्देशित गीत का उपयोग किया गया। कन्या मंडल और महिला मंडल की बहनों ने एक वीडियो के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी एवं साध्वीप्रमुखाश्रीजी के जीवन-वृत्त को संक्षेप में दर्शाने का एक छोटा सा प्रयास किया।

वीडियो एडिटिंग में कन्या मंडल प्रभारी रीतिका गैलड़ा एवं सह-संयोजिका महिमा बाफना का विशेष सराहनीय श्रम लगा। इस कार्यक्रम में १० महिलाओं और ३ कन्याओं ने भाग लिया। सभी का आभार।

पुरानी ढालों का पुनरावर्तन कार्यशाला

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के द्वारा निर्देशित पर्वत पाटिया महिला मंडल के द्वारा 'प्राणी समकित किण विध आई रे' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक रूप से नमस्कार महामंत्र की मंगल स्वर लहरियों से किया। प्रेरणा गीत की प्रस्तुति महिला मंडल की बहनों द्वारा दी गई।

अध्यक्षा ललिता पारख ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि सभी बहनों को ये पुरानी ढालों को कंठस्थ करना है।

गीतिका का संगान पूर्व अध्यक्ष मनोज देवी गंग व कोषाध्यक्ष अंजु धाकड़ ने किया। निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम बोथरा ने पुरानी ढाल का अर्थ बताते हुए विवेचन व्याख्या करते हुए समझाया कि हम अपने जीवन में जीव-अजीव, पुण्य-पाप छह द्रव्य और नौ तत्त्व की जानकारी से किस तरह सम्यक्त्व को अपनाकर कैसे मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं।

सितंबर से लेकर दिसंबर तक प्रतिमाह के चार लक्की ड्रॉ निकाले जाते हैं नारीलोक की उन सभी बहनों को पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया। कार्यशाला का संचालन सुनीता पारख ने व आभार व्यक्त रवीना मेहता ने किया। कार्यक्रम में बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

अमृत सिंचन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के मनोनयन स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में अमृत सिंचन के तहत क्विज प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल, जसोल द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र से गोष्ठी का आगाज किया गया साथ ही मंगलाचरण किया।

पूर्व अध्यक्ष फेनादेवी भंसाली ने क्विज के विधिवत नियम बताए। कुल अठारह संभागियों ने भाग लिया। क्विज ५ राउंड में चलाए। प्रथम, द्वितीय राउंड साधारण प्रश्न, तृतीय राउंड पाँच प्रश्न एक साथ चतुर्थ राउंड ट्विस्ट प्रश्न व पंचम राउंड फेयर राउंड। इस प्रकार विनर ग्रुप में ममता मेहता, सुनीता बोकड़िया, डिंपल श्रीश्रीमाल, रनरअप राउंड में कविता सिंघवी, भावना भंसाली, हर्षिता बुरड़ व शेष संभागियों को सांत्वना पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

क्विज का संकलन किया फेना देवी भंसाली, मंजु भंसाली, ललिता मेहता, कन्या मंडल उप-संयोजिका, कुनिका बाघमार ने सहयोग किया। सभी संभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। कन्या मंडल व महिला मंडल की उपस्थिति सराहनीय रही।

प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई, साहुकारपेट।

अभातेममं के तत्त्वावधान में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें मनोनयन वर्ष स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई द्वारा चैतन्य रश्मि पुस्तक पर आधारित प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस आयोजन में राजश्री डागा ने अलग-अलग राउंड में प्रतियोगियों को प्रश्न पूछकर संचालन किया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, कमला गेलड़ा, द्वितीय स्थान रिंकू चोरड़िया एवं तृतीय स्थान सुभद्रा लुणावत ने प्राप्त किया। सभी प्रतियोगियों एवं कार्यक्रम की संयोजिका राजश्री डागा का सम्मान महिला मंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रायोजक विजयराज कटारिया रहे। कार्यक्रम का संचालन रीमा सिंघवी ने और धन्यवाद ज्ञापन उषा धोका ने किया।

अमृत सिंचन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

बालोतरा।

अमृत सिंचन भाषण प्रतियोगिता एवं कथानक का आयोजन अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें मनोनयन दिवस के उपलक्ष्य में न्यू तेरापंथ भवन में महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा की अध्यक्षता में किया गया।

सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि प्रथम चरण भाषण प्रतियोगिता में कुल २० महिलाओं एवं कन्याओं ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वेद मेहता, द्वितीय स्थान पिंकी लुक्कड़, तृतीय स्थान पर कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा और तनीषा चोपड़ा रहे। इस भाषण प्रतियोगिता के निर्णायकगण तेयुप पूर्व अध्यक्ष डॉ० रमेश भंसाली और तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद सालेचा थे। अखिल भारतीय तेममं के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सारिका बागरेचा ने कविता के माध्यम से अपने भाव साध्वीप्रमुखाश्री के प्रति समर्पित किए।

नाटक का संयोजन कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा एवं महिला मंडल सदस्य संतोष फोला मेहता द्वारा किया गया। यह नाटक महिला मंडल सदस्य रुचिका तातेड़ ने बनाया। इस कार्यक्रम में क्विज प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले ग्रुप को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर परिषद के सभापति सुमित्रा वेद मेहता, ओसवाल समाज के अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओसवाल, तेरापंथ सभा एवं ओसवाल समाज के मंत्री महेंद्र वेद मेहता उनकी टीम, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल और उनकी टीम सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। अतिथिगण का साहित्य के द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

कथानक दृश्य का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं व कन्या मंडल द्वारा महिला मंडल अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मनोनयन स्वर्ण जयंती पर अमृत सिंचन के तहत 'कथानक दृश्य' का आयोजन किया गया।

सामूहिक नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। साथ ही कन्या मंडल व महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया। अध्यक्ष सोहनी देवी, मंत्री ममता मेहता, कन्या मंडल संयोजिका कोमल श्रीश्रीमाल ने शासन माता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मुमुक्षु कला से शासन माता के सफर की विशेषताओं की अपने भावों की प्रस्तुति दी।

कथानक दृश्य के संकलन व संयोजन उपासिका लीलादेवी सालेचा ने किया। महिला मंडल की संरक्षिका पुष्पादेवी बुरड़, कन्या मंडल उप-संयोजिका कुनिका बाघमार ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में कन्या मंडल व महिला मंडल की उपस्थिति सराहनीय रही।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

प्रेक्षा वाहिनी की क्लास का आयोजन

बोलाराम।

प्रेक्षा वाहिनी प्रेक्षाध्यान क्लास की शुरुआत पंच-परमेष्ठी नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ की गई। असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मनोनयन अमृत महोत्सव के अवसर पर सभी ने बधाई व शुभकामनाएँ प्रेषित की। प्रेक्षा गीत का संगान वर्षा बैद ने किया।

तेममं की अध्यक्ष अनिता गिरिया ने शुभकामनाएँ प्रेषित की व समय-समय पर इस तरह के आयोजन होना चाहिए। प्रेक्षाध्यान योग प्रशिक्षिका इंदु कातरेला ने कक्षा को आगे बढ़ाते हुए शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़े कई प्रकार के प्रयोगों की जानकारी देते हुए क्रियाएँ करवाई।

आंध्रा तेलंगाना की संवाहक रीटा सुराणा ने प्रेक्षाध्यान से होने वाले लाभ के बारे में जानकारी देते हुए कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया। मंगलभावना बबीता कातरेला द्वारा की गई। मधु कातरेला ने आए हुए सभी महानुभावों का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन रीटा सुराणा द्वारा किया गया।

साध्वीप्रमुखाश्री : अमृत महोत्सव के आयोजन

अमृत महोत्सव : ५१ संकल्पों की भेंट

अमराईवाड़ी।

अभातेमम के निर्देशन में तेममं एवं कन्या मंडल द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में शासन माता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के श्रीचरणों में केंद्र द्वारा निर्देशित ५१ संकल्पों की भेंट की।

संकल्पों की अभिवंदना में उपासिका मंजु गेलड़ा एवं अध्यक्ष संगीता सिंघवी की सतत प्रेरणा रही। मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका रीतिका गेलड़ा एवं कोमल हिरण का सराहनीय श्रम रहा।

अमृत महोत्सव

कालू।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के चयन के ५० वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव पर सभा भवन में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। आज ही के दिन माघ कृष्णा त्रयोदशी को ५० वर्ष पूर्व साध्वीप्रमुखाश्री जी का चयन हुआ। आप ५० वर्षों से अपनी सेवाएँ दे रही हैं। यह धर्मसंघ की उपलब्धि है। अब शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रवेश हो रहा है। साध्वी उज्ज्वलरेखा जी ने कहा कि नारी संसार के मानचित्र पर उभरने वाली महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी तेरापंथ की गौरवशाली साध्वीप्रमुखाओं की परंपरा में ८वीं साध्वीप्रमुखा है। उन्नीस वर्ष की अवस्था में आचार्यश्री तुलसी के साथ से केलवा में दीक्षा ग्रहण की। इसी क्रम में मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री तुलसी ने उनके युवा कंधों पर विशाल साध्वी संघ का दायित्व सौंपा।

कार्यक्रम का प्रारंभ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। साध्वी हेमप्रभा जी, साध्वी नम्रप्रभा जी, सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामां जी ने अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री जी की विशेषताओं का उल्लेख संवाद द्वारा प्रस्तुत किया गया। महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। महिला मंडल सहमंत्री कल्पना सांड, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुशील बरमेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी अमृतप्रभा जी ने किया।

अमृत सिंचन, अमृत महोत्सव

बारडोली।

शासन माता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के ५०वें मनोनयन वर्ष के उपलक्ष्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

कन्या मंडल द्वारा कथानक दृश्यांकन की रोचक प्रस्तुति

भाषण प्रतियोगिता में १० बहनों ने भाग लिया। निर्णायक के रूप में उपासक पारसमल बाफना को आमंत्रित किया गया। प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले को सम्मानित किया गया व प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए गए।

प्रश्न मंच प्रतियोगिता में कन्या मंडल व महिला मंडल के २० सदस्यों ने भाग लिया। ५ राउंड में क्विज खिलाया गया। प्रतियोगिता में सभी ने अच्छी तैयारी के साथ भाग लिया। सभी को पुरस्कृत किया गया। क्विज की संचालिका प्रेरणा बाफना ने क्विज खिलाया एवं स्वरचित कविता की प्रस्तुति दी गई।

महिला मंडल द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री धर्मिष्ठा मेहता द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ५५ बहनों की उपस्थिति रही।

अमृत महोत्सव का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेरापंथ भवन में साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का अमृत महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आज हम असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्वर्ण जयंती अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। हम मनाएँ तो बड़ी बात नहीं बल्कि हमारे गुरु जिनकी स्वर्ण जयंती मना रहे हैं, असाधारण आपके रूप में मैं साधारण शब्दों में क्या बताऊँ। आप नारी जगत की उज्ज्वल रूप हो, आप नारायणी हो और इसके साथ-साथ और अनेक रूप से हमारे सामने आते हो। साध्वी सुधांशुप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष सुशील गिड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष चंद्रकांता पुगलिया, टीपीएफ अध्यक्ष मनोज सेठिया, महिला मंडल की बंगाल प्रभारी रमण पटावरी तथा स्थानीय महिला मंडल ने नाटक एवं सारिका बांठिया, ऋतु बांठिया, सुमन चिंडालिया ने गीत के माध्यम से अभिवंदना की। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल के मंगल संगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन मंत्री बसंत पटावरी ने किया।

साध्वीप्रमुखश्रीजी का ५०वाँ चयन दिवस

पूना।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी का ५०वाँ चयन दिवस मनाया गया। मंगल शुरुआत महिला मंडल के संगान से हुई। शासनश्री जिनरेखा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक विलक्षण धर्मसंघ है। एक गुरु के कुशल निर्देशन में यह संघ फलीभूत हो रहा है। अष्टम् साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी आचार्यश्री तुलसी की अनुपम कृति है। उन्होंने उनके विकास में बहुत परिश्रम किया।

साध्वी मधुरयशा जी ने कविता के माध्यम से साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी धवलप्रभा जी ने गीतिका और कविता के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी मदिवयशा जी ने असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी के कुशल व्यक्तित्व व नेतृत्व जीवन की प्रेरणा हम प्राप्त करें। अमृत महोत्सव की अमृत वर्षा हमारे ऊपर बरसती रहे।

तेयुप के अध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया, टीपीएफ के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, उपाध्यक्ष बसंतीलाल तलेसरा, सुरेंद्र कोठारी, सुमन मरलेचा ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के अमृत महोत्सव पर मंगलकामना, शुभकामना व्यक्त की। महिला मंडल की मंत्री पायल धाड़ेवा, गरिमा ललानी, नीलम आदि बहनों ने मुक्तक के माध्यम से साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। तेयुप के मंत्री अभिजीत बैंगानी ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन नीलम चोरड़िया ने किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट का आयोजन

जयपुर।

विलफ्रेड स्कूल, मानसरोवर में अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट अनामिका जैन और डॉ० जयश्री सिद्धा के सान्निध्य में करवाया गया, जिसमें ड्राइंग कांटेस्ट में कक्षा ६ से ८ के १०० बच्चों ने भाग लिया। लेखन प्रतियोगिता में कक्षा ९ से १२ के भी १०० बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने चित्रकला कांटेस्ट में सुंदर चित्रों के द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त किया।

हेड मिस्ट्रेस आशा ने इन परिस्थितियों में अणुव्रत समिति को कांटेस्ट करवाने में जो योगदान दिया उसकी सराहना की।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

पर्वत पाटिया।

सायरा निवासी, सूरत प्रवासी फूलचंद कावड़िया के सुपुत्र अमित कावड़िया एवं भींडर निवासी प्रकाश वया की सुपुत्री माधुरी वया का शुभ विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि से मंगल मंत्रोच्चार द्वारा आदिनाथ जैन भवन में किया गया।

मुख्य संस्कारक के रूप में गुजरात राज्य के जैन संस्कार सहयोगी मनीष मालू, सहयोगी संस्कारक के रूप में सूरत से हिम्मत बम्ब एवं स्थानीय परिषद के संस्कारक रवि मालू का सहयोग रहा।

कार्यक्रम में तेयुप के उपाध्यक्ष-द्वितीय दिलीप चावत, सहमंत्री-द्वितीय शैलेष चंडालिया, संगठन मंत्री मुकेश बाबेल एवं सदस्य भूपेंद्र कांग्रेचा उपस्थित रहे। परिवार से पिंकी-भूपेश कावड़िया ने संस्कारकों एवं आए हुए मेहमानों का आभार व्यक्त किया।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

रायपुर।

पूनम सेठिया के के०पी० इंटरप्राइजेस प्रतिष्ठान का स्थानांतरण शुभारंभ पूजन जैन संस्कार विधि से संपन्न कराने का अवसर तेयुप, रायपुर को प्राप्त हुआ।

संस्कारक अनिल दुगड़ द्वारा संपूर्ण विधि मंत्रोच्चार द्वारा पारिवारिकजनों की गरिमामय उपस्थिति में संस्कार विधि संपादित कराई गई। तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने सेठिया परिवार के साथ उपस्थितजनों व संस्कारक के प्रति आभार व्यक्त किया। संस्कार विधि में सुमित जैन, सुशील डागा, पंकज बैद, तेयुप सदस्यों की उपस्थिति रही।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

मनोज बोथरा के नूतन प्रतिष्ठान का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ किया गया। संस्कारक प्रकाश धींग, दीपक संचेती एवं वीरेंद्र सालेचा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि को संपादित किया। तेयुप उपाध्यक्ष पंकज घीया ने बोथरा परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

परिषद की ओर से बोथरा परिवार को मंगभावना पत्रक भेंट दी गई। बोथरा परिवार से मनोज ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार प्रकट किया।

नामकरण संस्कार

रामप्रस्थ, यूपी।

राजेंद्र-ममता बांठिया की सुपौत्री व वर्धमान-ज्योति बांठिया की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा एवं संस्कारक सुभाष दुगड़ ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम को संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर अभातेयुप सदस्य विकास चोरड़िया, गणमान्य जनों व पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति रही।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पर्वत पाटिया।

नोखा निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी जितेंद्र कुमार गोलछा के सुपुत्र श्रेयांस गोलछा व सिंथल निवासी पर्वत पाटिया प्रवासी प्रदीप गंग के सुपुत्र पारस गंग के संयुक्त नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक विजयकांत खटेड़ एवं धर्मचंद श्यामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारों की प्रेरणा से परिवारजनों ने त्याग-प्रत्याख्यान किए। परिवार की तरफ से प्रदीप गंग ने संस्कारकों का आभार व्यक्त किया। परिषद की तरफ से अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार एवं मंत्री भरत जैन उपस्थित थे। अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने परिवार और संस्कारकों का आभार व्यक्त किया। तेयुप की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 फरवरी - 6 मार्च, 2022

✦ *व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करे?*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

चैतन्य-केंद्रों का प्रभाव

प्रश्न : ज्ञानमयी चेतना का विकास होने पर भी आंतरिक आवेगों से छुटकारा न मिले तो व्यक्ति शांति से जी नहीं सकता। उन आवेगों पर विजय पाने के लिए किस चैतन्य-केंद्र पर ध्यान करना चाहिए?

उत्तर : सिर के अग्र भाग में अर्थात ज्ञान-केन्द्र की ढलान में एक विशिष्ट चैतन्य-केंद्र है, जो शांति-केंद्र के नाम से अपनी पहचान बना चुका है। यह केंद्र मनुष्य के आवेशों के लिए उत्तरदायी है। आवेश और तापमान का नियंत्रण यहीं से होता है। शांति-केंद्र का परिष्कार होने से आवेश स्वयं शांत हो जाते हैं। इसे कषाय-केंद्र और उसके उपशमन का केंद्र भी कहा जा सकता है। जब तक यह केंद्र परिष्कृत नहीं होता, कषाय-केंद्र हैं। परिष्कृत होते ही यह शांति-केंद्र बन जाता है।

मनुष्य की जितनी संज्ञाएं हैं, वृत्तियां हैं, मोह-कर्म की प्रकृतियां हैं, उन सबकी अभिव्यक्ति के केंद्र शरीर में विद्यमान हैं। किंतु यह खोजा नहीं गया कि कौन-सी वृत्ति की अभिव्यक्ति का केंद्र यहां है? शरीर-शास्त्रियों और मानस-शास्त्रियों ने इस विषय पर खोज की और उन्होंने पता लगा लिया कि आवेश का नियंत्रण करने वाला केंद्र कहां है? अध्यात्म के प्राचीन आचार्यों ने भी इस विषय में खोज की थी, पर मध्यकाल में उसकी विस्मृति हो गई। हमने उन दोनों के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान के द्वारा उन स्थानों को खोजने का प्रयत्न किया। एक सीमा तक हमारा प्रयत्न फलीभूत हुआ और वह स्थान हमारी पकड़ में आ गए। इस खोज में चैतन्य-केंद्रों के ध्यान की उपयोगिता बढ़ गई।

मनोविज्ञान के अनुसार आवेग मनुष्य की मूलभूत मनोवृत्ति है। दो प्रकार के आवेग होते हैं- आंतरिक और बाह्य। बाह्य आवेगों पर नियंत्रण स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद नहीं है। आंतरिक आवेगों पर नियंत्रण न हो तो वह स्थिति अहितकर हो जाती है। शांति-केंद्र पर दीर्घकाल तक ध्यान करने वालों का अनुभव है कि इस प्रयोग से वे अपने आवेगों पर नियंत्रण पाने में सफल हुए हैं।

प्रश्न : एक मान्यता के अनुसार हमारे शरीर में तीसरा नेत्र भी है। क्या यह बात सही है? यदि वह है तो चैतन्य-केन्द्रों में से ही कोई केन्द्र है अथवा उसका स्वतंत्र अस्तित्व है? वह कहां है?

उत्तर : शांति-केंद्र के नीचे एक महत्त्वपूर्ण चैतन्य-केंद्र है- ज्योति-केंद्र। यह 'पीनियल ग्लैण्ड' का स्थान है। इसके विषय में शरीर-शास्त्री बहुत कम जान पाए हैं। अभी इन दिनों इस संबंध में कुछ जानकारियां मिली हैं, जिनके आधार पर इसकी महत्ता का अंकन किया जा रहा है। वास्तव में यह ज्योतिकेंद्र ही तीसरा नेत्र है।

कुछ लोग दर्शन-केंद्र का आज्ञाचक्र को तीसरा नेत्र बतलाते हैं, किंतु ज्योति-केंद्र उनसे भी विशिष्ट है। एक दृष्टि से दर्शन-केंद्र और ज्योति-केंद्र इन दोनों को ही तीसरा नेत्र कहा जा सकता है, पर दोनों में महत्त्व इसका अधिक है। महत्त्व का कारण है, इसकी उपयोगिता। यह क्रोध को शांत करने वाला केंद्र है। इस पर ध्यान करने से क्रोध बहुत जल्दी शांत हो जाता है। ब्रह्मचर्य की दृष्टि से भी इस केंद्र का बड़ा उपयोग है। इसे नियामक ग्रंथि या मुख्य ग्रंथि 'मास्टर ग्लैण्ड' माना गया है। नीचे की सभी ग्रंथियों के स्रावों पर नियंत्रण करने वाला यही केंद्र है। इसके परिष्कार से हमारी अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक समस्याएं सुलझ जाती हैं।

प्रश्न : तीसरे नेत्र के लिए आपने ज्योति-केंद्र और दर्शन-केंद्र दोनों के नाम बतलाए। ज्योति-केंद्र के संबंध में कुछ जानकारी भी आपने करवा दी है। यह दर्शन-केंद्र कहां है? और क्या काम करता है।

उत्तर : पीयूष-ग्रंथि (पिच्यूटरी) का जो स्थान है, वह दर्शन-केंद्र है। दोनों भृकुटियों और दोनों आंखों के बीच का स्थान है। इस केंद्र पर जैसे-जैसे ध्यान जमता है, वैसे-वैसे प्रेक्षा अंतःप्रेक्ष बन जाती है, प्रज्ञा अंतः बन जाती है। यहां पहुंचने पर व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्णतः आंतरिक बन जाता है। अंतर्मुखता आने के बाद बाहरी वृत्तियां किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित नहीं कर सकतीं। ललाट और मस्तिष्क का यह स्थान साधना की दृष्टि से एक महान अवदान है। यदि हम पूरी जागरूकता, एकाग्रता और संकल्पशक्ति के साथ इसका उपयोग करें तो जीवन में ऐसा रूपांतरण घटित हो सकता है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

प्रश्न : आपने केंद्रों का नामकरण किसी आधार पर किया है?

उत्तर : चैतन्य-केंद्रों के नाम उनसे होने वाली निष्पत्तियों और कार्यविधियों के आधार पर किए गए हैं। प्राचीन ग्रंथों में शरीर-गत चक्रों के नाम उपलब्ध हैं। तंत्र-शास्त्र और हठयोग में चक्रों के नामों का उल्लेख है। किंतु ऐसा अनुभव हुआ कि शरीर में केवल छह-सात ही चक्र नहीं हैं। शक्ति और चैतन्य के सैकड़ों केंद्र हैं उसमें। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण केंद्रों का चुनाव किया गया है और उन पर ध्यान के प्रयोग किए गए। प्रयोग-काल में जो अनुभव हुए उन्हें आधार मानकर नामों का अवतरण सहज हो गया। चैतन्य-केंद्रों के नाम खोजने की दृष्टि से न किसी ग्रंथ का सहयोग लिया और न कोई चिंतन या परामर्श ही किया। जैसे-जैसे उनकी व्याख्या की, नाम अवतरित होते गए और उनकी संगति बैठती गई। किस केंद्र पर ध्यान करने से शरीर, मन और जीवन में क्या घटित होता है? इस प्रकार की अनुभूति के आधार पर चैतन्य-केंद्रों के नामों को अन्वर्थ बनाने का लक्ष्य भी सामने रहा है।

चैतन्य-केंद्रों का जागरण : भाव-तरंगों का परिष्कार

चाक्षुष केंद्र कनीनिका, शांति-सेतु अविवाद।
सधे सहज एकाग्रता, तन-मन में आह्लाद।।
छठा केंद्र है कान में, अप्रमाद अभिधान।
जागरूकता-वृद्धि में, है इसका अवदान।।
प्राण-केंद्र नासाग्र पर, लगता जिसका ध्यान।
उसके प्राणों में सदा, भर जाती मुसकान।।
ब्रह्म-केंद्र जिह्वाग्र पर, जमे ध्यान अविराम।
सहज शांत हो वासना, आत्मरमण परिणाम।।

प्रश्न : चाक्षुष केंद्र का क्या काम है? यह हमारी दृष्टि को निर्मल बनाता है अथवा भाव-तरंगों को प्रभावित करता है? इस केंद्र पर ध्यान करते समय आँखें खुली रखनी चाहिए या बंद?

उत्तर : आँख सबको देखती है, किंतु आँख पर हम कभी ध्यान केंद्रित नहीं करते। आँख को देखने और पहचानने के लिए एक भीतरी आँख की जरूरत है, जिसका उद्घाटन ध्यान के द्वारा हो सकता है। मस्तिष्क के साथ आँख का गहरा संबंध है। प्राण विद्युत के विकिरण का यह एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। जब हम आँख को बंद कर उस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसका अर्थ है कि हम अपनी विद्युत को बहुत बचा लेते हैं। उस बची हुई विद्युत का उपयोग संकल्पशक्ति या एकाग्रता के विकास में किया जा सकता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(५९)

देख मधुर मुस्कान तुम्हारी सबके दिल खिल जाते।
हो जाते हैं तृप्त कान जब मीठी तान सुनाते।।

जिस पथ से दुनिया चलती वह पथ तुमको न सुहाया
तूफानी लहरों का तुमने जब तब साथ निभाया
गति को जीवन मान चल पड़े वीरानी राहों में
उलझे नहीं कभी भी तुम मन की कल्पित चाहों में
घोर तिमिर को चीर सत्य का हाथ पकड़ ले आते।।

धूमिल चौराहे पर युग का रुका हुआ जीवन-रथ
सांझ सुरमई गहराई सहसा छूटा पीछे पथ
नभ का नखत गिरा ऊपर से नहीं धरा ने झेला
बहता निकट तुम्हारे सदा रोशनी का इक रेला
उखड़े-उखड़े हर मानव को देव! तुम्हीं सहलाते।।

मथ डाला हाथों-पाँवों से सागर को तट पाने
मन की प्यास बुझाने जग के कितने पनघट छाने
प्यास और मझधारा ने जब हरदम साथ निभाया
तब तुमने पाषाणों को भी पानी पर तैराया
मंथन कर समंदर का सबको इमरत आज पिलाते।।

(६०)

तुम कहो तो पंथ को मंजिल बना लूँ।
प्यास अपनी आग से भी मैं बुझा लूँ।।

विपुल रेला है प्रलोभन का यहाँ पर
तुम कहो तो मैं इसी का वरण कर लूँ
पीठ के पीछे खड़ी हैं आपदाएँ
तुम कहो तो मैं उन्हीं का स्मरण कर लूँ
शिशिर को मधुमास का वैभव लुटाकर
तुम कहो तो मौन में भी गुनगुना लूँ।।

ज्योति का झरना निमंत्रण दे रहा है
तुम कहो तो जा वहाँ विश्राम कर लूँ
तिमिर का आह्वान भी मैंने सुना है
तुम कहो तो जा वहीं कुछ काम कर लूँ
धरा की रौनक लुभाती ही रही है
तुम कहो तो व्योम में जा घर बसा लूँ।।

उतर आया गीत कानों में विजय का
तुम कहो तो मैं इसी को प्यार कर लूँ
सुन रही आहट पराजय की निरंतर
तुम कहो तो मैं उसे गलहार कर लूँ
है नहीं मझधार में भी कष्ट मुझको
तुम कहो तो मैं यही तट को बुला लूँ।।

(क्रमशः)

संबोधि

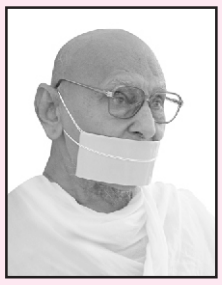

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

भगवान् प्राह

(१७) निवृत्तिः पूर्णतामेति, शैलेशीञ्च दशां श्रितः।
अप्रकम्पस्तदा योगी, मुक्तो भवति पुद्गलैः।।

जब निवृत्ति पूर्णता को प्राप्त होती है तब योगी शैलेशी दशा को प्राप्त होकर अप्रकंप बनता है और पुद्गलों से मुक्त हो जाता है।

पूर्ण-निवृत्त स्थिति में पुद्गलों का ग्रहण सर्वथा निरुद्ध हो जाता है। पूर्वबद्ध कर्मों के निर्जरण से आत्मा अपने मौलिक स्वरूप में अवस्थित हो जाती है। अब उसके पास संसार में रहने का कोई कारण नहीं है। इसलिए वह निर्वाण को प्राप्त हो जाती है। जो प्राणी प्रवृत्ति में संलग्न होते हैं उनके लिए शुभाशुभ प्रवृत्तियों का क्रम अविच्छिन्न चलता रहता है। दोनों के मूलोच्छेद के बिना आवागमन का प्रवाह अवरुद्ध नहीं होता।

कर्म के क्षीण होने की प्रक्रिया है—सबसे पहले अविरति और दुष्प्रवृत्ति से व्यक्ति मुक्त बने। बुद्ध की साधना-पद्धति में शील को प्रथम स्थान दिया है। योग में यम और नियम की प्रमुखता है। महावीर महाव्रत और अणुव्रत की बात कहते हैं। सबका सार-सूत्र इतना ही है कि इनके द्वारा असत् प्रवृत्ति के प्रवाह को सबसे पहले अवरुद्ध किया जाए। अशुभ से क्रिया का मुँह मोड़कर उसे शुभ कर्म-प्रवृत्ति से जोड़ा जाए। शुभ प्रवृत्ति का कार्य होगा—शुभ पुद्गलों का अर्जन और बद्ध अशुभ कर्मों का निर्जरण। जैसे कुछ औषधियाँ स्वास्थ्य लाभ करती हैं और बल-संवर्द्धन भी। ठीक इसी तरह शुभ प्रवृत्ति का कार्य है। शुभ प्रवृत्ति जब फलाकांक्षा और वासना से शून्य होती है तब क्रमशः उससे निवृत्ति का पथ प्रशस्त होता है। अंततोगत्वा पूर्ण निवृत्ति की स्थिति साधक के जीवन में घटित होती है।

(१८) सम्यक्त्वं विरतिस्तद्वद्, अप्रमादोऽकषायकः।
अयोगः पंचरूपेयं, निवृत्तिः कथिता मया।।

सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, अकषाय और अयोग—मैंने इस पाँच प्रकार की निवृत्ति का निरूपण किया है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-३२ : पाँच चारित्र वालों में क्षयोपशम के कितने बोल पाते हैं?

उत्तर : सामायिक, छेदोपस्थापनीय एवं परिहार विशुद्धि वालों में २१ पाते हैं : ज्ञानावरणीय—५ (चार ज्ञान, भणन-गुणन), दर्शनावरणीय—८ (सभी), मोहनीय—२ (नामानुसार चारित्र, सम्यग् दृष्टि), अंतराय—६ (पाँच लब्धि, पंडित वीर्य)। सूक्ष्म संपराय वालों में ११ : ज्ञानावरणीय—४ (चार ज्ञान), दर्शनावरणीय—कोई नहीं, मोहनीय—१ (चारित्र), अंतराय—६ (ऊपरवत्)। यथाख्यात वालों में १६ : ज्ञानावरणीय—५ (सासमायिक वत्) दर्शनावरणीय—८ (सभी), मोहनीय—कोई नहीं, अंतराय—६ (ऊपरवत्)।

प्रश्न-३३ : क्या चारित्र ग्रहण करने में वेश परिवर्तन की अनिवार्यता है?

उत्तर : वेश परिवर्तन की वैसे अनिवार्यता नहीं है किंतु दीर्घकालीन चारित्र पर्याय में इसकी अनिवार्यता भी है। वेश परिवर्तन किए बिना प्रवचन, गोचरी आदि नहीं करते।

प्रश्न-३४ : तिरेसठ शलाकापुरुषों में कौन कितने चारित्र ग्रहण कर सकते हैं?

उत्तर : २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ६ बलदेव, ६ वासुदेव, ६ प्रतिवासुदेव—ये ६३ शलाकापुरुष होते हैं। वासुदेव, प्रतिवासुदेव चारित्र ग्रहण नहीं कर सकते। तीर्थंकर, बलदेव नियमतः चारित्र ग्रहण करते हैं। चक्रवर्ती में कोई ग्रहण करते हैं, कोई नहीं करते।

प्रश्न-३५ : निदान कृत व्यक्ति को चारित्र आ सकता है?

उत्तर : भवोपग्राही निदान करने वाले चारित्र ग्रहण नहीं कर सकते, अन्य निदान वाले उसे भोगने के बाद चारित्र ग्रहण कर सकते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य भद्रबाहु (द्वितीय)

लक्षणविद्या, स्वप्नविद्या, मंत्रविद्या एवं ज्योतिषविद्या के प्रयोग का गृहस्थ के सम्मुख सम्भाषण करना साधु के लिए वर्जित है फिर भी जैन धर्म की प्रभावना को प्रमुख मानकर आचार्य भद्रबाहु ने निमित्त ज्ञान से लघु सहोदर के नवजात शिशु का आयुष्य सात दिन घोषत किया था तथा बिल्ली के योग से उसकी मौत बताई थी।

वराहमिहिर के द्वारा शतशः प्रयत्न होने पर भी सात दिन से अधिक बालक बच न सका। उसकी मौत का निमित्त अर्गला थी, जिस पर बिल्ली का आकार था। भद्रबाहु का निमित्त ज्ञान सत्य के निकष पर सत्य सिद्ध हुआ। जन-जन के मुख पर उनका नाम प्रसारित होने लगा। भद्रबाहु ने वराहमिहिर के घर पहुँचकर लघु भ्राता के शोक-संतप्त परिवार को सांत्वना प्रदान की। आचार्य भद्रबाहु की ज्योतिषविद्या से प्रभावित होकर वहाँ के राजा जितशत्रु ने उनसे श्रावक धर्म स्वीकार किया था।

वराहमिहिर को लज्जित होना पड़ा। व्यथित बना वराहमिहिर मर कर व्यंतर देव बना। तपोमूर्ति संतों पर तो उसका कोई बस नहीं चल सका पर पूर्व वैर स्मरण कर श्रावक-संघ को त्रास देने लगा। आचार्य भद्रबाहु ने संघ में फैले उपसर्ग की उपशांति हेतु भगवान् पार्श्वनाथ का एक स्तोत्र बनाया जिसका प्रथम पद—**'उवसग्गहरं पासं'** होने से यह इसी नाम से प्रसारित हुआ तथा आज भी बहुत ही प्रभावक माना जाता है।

विघ्न की शांति हो जाने के बाद भी स्तोत्र जन-जन में कंठस्थ था। कइयों ने इसका गलत ढंग से उपयोग प्रारंभ कर दिया तब स्तोत्र की एक गाथा गुप्त रख दी गई, ऐसा माना जाता है।

आर्या छंदों में निर्मित पद्यमयी प्राकृत भाषा में दस निर्युक्तियों के अतिरिक्त भद्रबाहु-संहिता आदि ग्रंथ भी उनके माने जाते हैं। इनका समय विक्रम की पाँचवीं शताब्दी के बाद का है।

आचार्य मानतुङ्ग

स्तोत्र-काव्यों में भक्तामर स्तोत्र उत्तम रचना है। भक्ति रस का यह छलकता निर्झर है। इस स्तोत्र के रचनाकार आचार्य मानतुङ्ग थे। वे अपने युग के प्रतिष्ठित कवि थे और यशस्वी विद्वान् थे। कवित्व-शक्ति का उनमें विशेष विकास था एवं संस्कृत भाषा पर उनका आधिपत्य था।

आचार्य मानतुङ्ग ने श्वेताम्बर मुनि-दीक्षा और दिगम्बर मुनि-दीक्षा दोनों ही प्रकार की दीक्षा ग्रहण की थी। श्वेताम्बर परम्परा में आचार्य मानतुङ्ग के गुरु अजितसिंह और दिगंबर परम्परा में उनके दीक्षा गुरु चारुकीर्ति थे।

मानतुङ्ग का परिवार धार्मिक संस्कारों से संस्कारित था। धर्मनिष्ठ पिता धनदेव के योग से मानतुङ्ग को धार्मिक संस्कार सहज प्राप्त हुए। जैन दिगंबर मुनिजनों से प्रवचन सुनकर धीर, गंभीर मानतुङ्ग को संसार से विरक्ति हुई। मां-बाप से अनुमति लेकर उन्होंने आचार्य चारूकीर्ति से दिगंबर मुनि-दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा-जीवन में उनका नाम महाकीर्ति रखा। मुनि-चर्या में सजग महाकीर्ति एक दिन लक्ष्मीधर श्रेष्ठी के घर गोचरी गए। लक्ष्मीधर श्रेष्ठी की पत्नी मानतुङ्ग की बहिन थी। वह श्वेताम्बर परम्परा को मानती थी। उसने मुनि के सामने श्वेताम्बर मुनि-चर्या का वर्णन किया।

बहिन की प्रेरणा से बोध-प्राप्त महाकीर्ति मुनि ने दिगम्बर मुनिचर्या का परित्याग कर श्वेताम्बराचार्य अजितसिंह के पास श्वेताम्बर मुनि-दीक्षा स्वीकार की। श्वेताम्बर श्रमण बनने के बाद संप्रदाय-परिवर्तन के साथ संभवतः उनका नाम परिवर्तित हुआ। वे मानतुङ्ग से संबोधित होने लगे जो उनके गृहस्थ जीवन का नाम था।

गुरु के पास तपोविधिपूर्वक मुनि मानतुङ्ग ने आगम का अध्ययन किया। स्वल्प समय में वे आगमविज्ञ मुनियों की गणना में आने लगे। गुरु ने योग्य समझकर उनकी नियुक्ति सूरि पद पर की। गच्छ से विशेष सम्मान मानतुङ्ग को प्राप्त हुआ। सरस्वती उन पर प्रसन्न थी। वे बुद्धि के धनी ही नहीं, कुशल काव्यकार भी थे।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 फरवरी - 6 मार्च, 2022

✦ *स्वर्ग के सुख क्षणिक हैं, जबकि मोक्ष में शाश्वत सुख प्राप्त होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव के विविध आयोजन

मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में १५८वाँ मर्यादा महोत्सव समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भुवनेश्वर, कटक, पुरी, बलांगीर, सूरत आदि क्षेत्रों के लोग अच्छी संख्या में उपस्थित थे। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारत के इतिहास में जिस प्रकार १५ अगस्त और २६ जनवरी का महत्त्व है, उसी प्रकार तेरापंथ धर्मसंघ में आषाढ़ी पूर्णिमा और माघ शुक्ला सप्तमी का महत्त्व है। तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य भिक्षु ने संघ को सुव्यवस्थित अनुशासित, मर्यादित व संगठित मर्यादा महोत्सव का आधार बना। मर्यादा महोत्सव के सूत्रधार चतुर्थ आचार्य जयाचार्य थे। आचार्य भिक्षु वज्र संकल्पी और कुशल शिल्पी थे। उनकी साधना बेजोड़ थी।

इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने भी सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने दिया। अल्प संख्यक आयोग के सदस्य प्रकाश बेताला, बलांगीर से मनोज जैन, कटक सभा के मंत्री मनोज दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप, संघीय गीतों के मधुर संगायक कमल सेठिया, सूरत से पूनम बुरड़ ने मर्यादा गीतों का संगान किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पारस सुराणा ने व कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

१७८वाँ मर्यादा महोत्सव का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव आयोजित हुआ। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र एवं श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत करने के बाद तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया ने स्वागत भाषण दिया।

रेखा धाकड़, साध्वी मृदुयशाजी, साध्वी ऋद्धियशाजी, साध्वी प्रेरणाश्रीजी, तेरापंथी सभा, तेयुप आदि ने विविध-विधाओं में अपने विचारों को प्रकट किया। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि तेरापंथ के आद्य प्रणेता आचार्य भिक्षु ने जो संविधान बनाए, जो मर्यादाएँ लिखीं वे आज भी तेरापंथ धर्मशासन के प्राणभूत तत्त्व बने हुए हैं।

साध्वी विद्यावतीजी ने कहा कि तेरापंथ के प्रथम आचार्यश्री भिक्षु एक दूरदर्शी, तपस्वी, अचारनिष्ठ, लक्ष्य निष्ठ एवं क्रांतिदूत थे। दक्षिण मुंबई ज्ञानशाला ने एक रोचक अभिनव तेरापंथ मिल्ट्री नामक कार्यक्रम की प्रस्तुति देकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। तेरापंथ किशोर मंडल ने शब्द चित्र सुंदर रूप से प्रस्तुत किया।

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के चेयरमैन डॉ० एस० के० जैन तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, मुंबई तेमम की प्रचार-प्रसार मंत्री कांता डूंगरवाल आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता अभातेमम की पूर्व महामंत्री तरुणा बोहरा ने मर्यादा की विरल विशेषताओं पर उदाहरण देकर जनसमूह को आकर्षित किया।

इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य रवि डोसी, मुंबई तेमम की उपाध्यक्षा श्वेता सुराणा, आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के पदाधिकारीगण, तेयुप अध्यख पूरण चपलोत, मीठालाल सिसोदिया, प्रकाश सिसोदिया सहित अनेक वरिष्ठजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप उपाध्यक्ष, सभा मुंबई मीडिया संयोजक नितेश धाकड़ ने किया।

मर्यादा महोत्सव

उधना।

मुनि सुव्रत कुमार जी एवं मुनि आलोक कुमार जी आदि के संयुक्त सान्निध्य में तेरापंथी सभा, कामरेज के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन, बसेरा सोसायटी, कामरेज में तेरापंथ धर्मसंघ के १५८वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में अपने दीक्षा पर्याय के ५० वर्ष पूर्ण कर चुके मुनि सुव्रत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ एकमात्र ऐसा धर्मसंघ है जहाँ मर्यादाओं का महोत्सव मनाया जाता है। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ को दीर्घजीवी बनाने के लिए मर्यादाओं का निरूपण किया। मुनिश्री ने मर्यादा महोत्सव के अवसर पर स्वरचित गीत की प्रस्तुति दी।

मुनि आलोक कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने पौने तीन सौ वर्ष पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की। उनमें नेतृत्व की असीम क्षमता थी। महान व्यक्ति वह होता है जो अपने शिष्यों के व्यक्तित्व में निखार ला सके। आचार्य भिक्षु कुशल प्रशिक्षक एवं अनुशासक थे।

मुनि मंगल प्रकाश जी ने कहा कि अनुशासन और मर्यादाओं का अनुसरण करने वाला व्यक्ति अपने घर को भी स्वर्ग बना सकता है। मुनि लक्ष्यकुमार जी ने कहा कि मर्यादा विहीन जीवन डोर से कटी हुई पतंग के समान है। मुनि शुभम कुमार जी ने मर्यादाओं को व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि बनाया। प्रवक्ता उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने स्वरचित मुक्तकों द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष शंकरलाल मेहता ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हेम कुमार जी ने किया।

मर्यादा महोत्सव

साउथ हावड़ा।

साध्वी स्वर्णरेखाजी की प्रेरणा से मर्यादा महोत्सव के अवसर पर एक महनीय कार्यक्रम सभा भवन के प्रांगण में आयोजित हुआ। सह-संयोजिका अंजु चोरड़िया, ज्ञानशाला की अनुभवी प्रशिक्षिकाओं के अथक परिश्रम से व बच्चों की जागरूकता से यह कार्यक्रम साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में साउथ हावड़ा के ज्ञानार्थियों ने प्रस्तुत किया।

कोलकाता के सभी सभा-संस्थाओं से पदाधिकारीगण, वृहद कोलकाता व दक्षिण बंगाल की ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, साउथ हावड़ा सभा के मंत्री बसंत पटवारी, ज्ञानशाला संयोजक मालचंद भंसाली ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

मर्यादा महोत्सव का आयोजन

वाशी।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत सभागार में मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से किया। मंगलाचरण ज्ञानशाला प्रशिक्षक भिक्षु जोन की प्रस्तुति दी। तेरापंथ समाज, वाशी द्वारा पधारे हुए सभी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक समाज का स्वागत वक्तव्य तेरापंथ सभा मंत्री अशोक वड़ाला, तेयुप अध्यक्ष नितेश बाफना, तेमम संयोजिका इंदु वड़ाला ने किया।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि तेरापंथ का इतिहास समर्पण की स्याही से लिखा गया है, श्रीमद् भिक्षु मर्यादा व अनुशासन की सुदृढ़ सरस धाराएँ रचकर इसे कामयाबी का आसमान दे दिया।

साध्वी लावणीयप्रभाजी, साध्वी कुंदनयशाजी, साध्वी मुदितप्रभाजी, साध्वी मधुरप्रभाजी ने तेरापंथ के मनोवैज्ञानिक संविधान व महोत्सव गद्य पद्यात्मक रोचक प्रस्तुति दी। मधुर गायक विराग भारती ने गीत एवं पनवेल ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों द्वारा रोचक हाजिरी की। तेमम, कन्या मंडल द्वारा भावपूर्ण शब्द चित्रण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा मुंबई अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, मंत्री विजय पटावरी, अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी, अणुव्रत समिति मुंबई की अध्यक्षा कंचन सोनी, महिला मंडल की अध्यक्ष रचना हिरण, मंत्री अलका मेहता सहित अनेक जनों ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति लादूलाल श्रीमाल संपतलाल बागरेचा, वाशी प्रभारी नरेश चपलोत रतनलाल सियाल, सोहनलाल कोठारी, कमलेश बोहरा, ललित बोहरा, भगवती पटवारी, महेश बाफना, मंत्री तरुण डागलिया, संयोजक नवी मुंबई, पवन परमार सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश बाफना ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने किया।

तेरापंथ की मर्यादा विश्व में विशिष्ट

सेलम।

मुनि सुधाकर कुमार जी एवं मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में १५८वाँ मर्यादा महोत्सव मनाया गया। विश्व में तेरापंथ एकमात्र ऐसा धर्मसंघ है जो एक आचार्य और एक विधान को मनाता है। तेरापंथ धर्मसंघ की एकता, संगठन, अनुशासन और मर्यादा का प्रतीक है—मर्यादा महोत्सव।

मुनि सुधाकर जी ने कहा कि यह भैक्षव शासन एक नंदन वन है। यहाँ हरेक व्यक्ति, साधु हो या श्रावक, मर्यादित जीवन जीता है। आचार्य निष्ठा, विचार शुद्धि तथा संघ व संघपति के प्रति समर्पण भाव को मजबूत करने का अवसर है यह खास दिन। श्रीमज्जयाचार्य ने आचार्य भिक्षु की दूरदर्शिता, परंपरा एवं दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए जो तीन उत्सव संघ को प्रदान किए उनमें एक है—मर्यादा महोत्सव।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि पतंग तब तक ऊँचाइयों को छूती है जब तक वह डोर से बंधी है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य का जीवन स्तर तब तक प्रगतिशील है जब तक वह मर्यादित एवं संयमित है।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि अभातेमम की अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कहा कि तेरापंथ श्रावक का सच्चा परिवार ही अनुशासनवान होना है। मुख्य अतिथि चेन्नई सभा के अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने भी अपने विचार व्यक्त करने के साथ-साथ सभा को तमिलनाडू सरकार द्वारा जैन अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र हासिल करने की प्रक्रिया के सरलीकरण के बारे में जानकारी साझा की।

सेलम सभा के अध्यक्ष राजेश भंसाली ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। चेन्नई साहुकारपेट ट्रस्ट के चेयरमैन विमल चिप्पड़, तनसुखलाल नाहर, कोयंबटूर के सभा अध्यक्ष प्रेम सुराणा, सेलम ट्रस्ट के चेयरमैन विरेंद्र कुमार सेठिया, महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता बोहरा सहित अनेक सदस्यों ने अपने भाव व्यक्त किए। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष भरत डूंगरवाल ने किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में रमेश आंचलिया, अशोक चोपड़ा, प्रशांत लुंकड़ और पुनीत डूंगरवाल ने विशेष सहयोग दिया। मंच संचालन सभा के मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

अनुशासन अनजानी अंधेरी पगडंडियों में प्रकाश दीप

विल्लुपुरम।

मुनि अर्हत कुमार जी ने मर्यादा महोत्सव के अवसर पर कहा—अनुशासन अनजानी अंधेरी पगडंडियों में प्रकाश दीप है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं का सूत्रपात किया और पूर्ववर्ती आचार्यों ने अपने खून-पीसने से इस धर्मसंघ को सींचा व जयाचार्य ने इसे महोत्सव का रूप दिया और आज आचार्यश्री महाश्रमण जी मर्यादा की महिमा को दशों दिशाओं में फैला रहे हैं। हम भी मर्यादा में रहकर जीकर नए क्षितिज को छूने का प्रयास करें।

सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि मर्यादा नियम है, मर्यादा संरक्षण है, मर्यादा समर्पण है, मर्यादा संगठन है, मर्यादा सिद्धांत है, जो मर्यादा में रहता है वह आबाद रहता है व याद रहता है।

बाल संत जयदीप कुमार जी ने मर्यादा की व्याख्या की। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण विल्लुपुरम सभा अध्यक्ष जवारीलाल सुराणा ने दिया। दिशा बाफना, गीता बरड़िया, मदुरै सभा अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला, मंजु पुदुच्चेरी से हेमराज कुंडलिया, निर्मल पारख, त्रिची सभा अध्यक्ष अजित बोथरा, रिखबचंद बंब, मुकेश ने अपने विचार व्यक्त किए। स्नेहा भंडारी, हर्षा आंचलिया, तेयुप विल्लुपुरम, सरला ओस्तवाल, वलवनुर महिला मंडल, त्रिची महिला मंडल, शोभाग सांड, हर्षित बोथरा आदि ने अपने भावों को गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया।

मदुरै ज्ञानशाला से ओजस पारख, पार्श्व दुगड़ ने प्रस्तुति दी। महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने शब्द चित्र की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन महेंद्र धोका ने किया। कार्यक्रम में मदुरै, त्रिची, कदलुर, कुम्बकोनम, पुदुच्चेरी, कांचीपुरम, मायावरम, चेन्नई, तिरुकालिकुंडम, सिरकाली, तिरुवनामलै, वलवनुर आदि क्षेत्रों से लोगों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

✦ *जहाँ तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

परमपूज्य आचार्यप्रवर द्वारा वि०सं० २०७९ के लिए घोषित चातुर्मास व विहार निर्देश

संत

(१)	मुनि हर्षलाल जी	दौलतगढ़
(२)	मुनि महेंद्र कुमार जी	चेम्बूर, मुंबई
(३)	मुनि सुरेश कुमार जी	उदयपुर
(४)	मुनि रवींद्र कुमार जी	नाथद्वारा
(५)	मुनि विमल कुमार जी	संगरूर
(६)	मुनि मुनिसुव्रत कुमार जी	शहादा
(७)	मुनि कमल कुमार जी	सुनाम
(८)	मुनि उदित कुमार जी	सिटिलाईट, सूरत
(९)	मुनि मोहजीत कुमार जी	बालोतरा
(१०)	मुनि रमेश कुमार जी	टिटिलागढ़
(११)	मुनि प्रशांत कुमार जी	कांटाबाजी
(१२)	मुनि कुलदीप कुमार जी	अहमदाबाद
(१३)	मुनि जिनेश कुमार जी	कटक
(१४)	मुनि अर्हत् कुमार जी	गांधीनगर, बैंगलोर
(१५)	मुनि मदन कुमार जी	भीलोड़ा, गुजरात
(१६)	मुनि जम्बूकुमार जी (सर०)	उकलाणा मंडी
(१७)	मुनि धर्मेश कुमार जी	गजपुर
(१८)	मुनि आलोक कुमार जी	भुसावल
(१९)	मुनि दीपकुमार जी	विशाखापत्तनम्
(२०)	मुनि चैतन्यकुमार जी	किशनगढ़
(२१)	मुनि पुलकित कुमार जी	भुज
(२२)	मुनि निकुंजकुमार जी	गांधीधाम
(२३)	मुनि रणजीत कुमार जी	धुलिया-महाराष्ट्र
(२४)	मुनि अमृत कुमार जी	श्री गंगानगर अंचल की ओर
(२५)	मुनि तत्त्वरुचि जी	आमेट
(२६)	मुनि पारस कुमार जी	पुर की ओर
(२७)	मुनि सुमति कुमार जी	जयपुर की ओर
(२८)	मुनि स्वस्तिक कुमार जी	जगराओं
(२९)	मुनि हिमांशु कुमार जी	हुबली
(३०)	मुनि रश्मिकुमार जी	विजयनगर-बैंगलोर
(३१)	मुनि यशवंत कुमार जी	शिशोदा
(३२)	मुनि संजय कुमार जी	दिवेर
(३३)	मुनि सुधाकर कुमार जी	माधवरम-चेन्नई
(३४)	मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी	भुवनेश्वर-उड़ीसा

साध्वियाँ

(१)	साध्वी चांदकुमारी जी (लाडनूं)	बीदासर (समाधि केंद्र)
(२)	साध्वी राजीमती जी	नोखा मंडी
(३)	साध्वी जसवती जी	आसींद
(४)	साध्वी कनकश्री जी (लाडनूं)	भिक्षु साधना केंद्र, जयपुर
(५)	साध्वी सरोज कुमारी जी	भिवानी
(६)	साध्वी धनश्री जी	जयपुर
(७)	साध्वी यशोमती जी	बीदासर (समाधि केंद्र)
(८)	साध्वी सुमनश्री जी	सिरसा
(९)	साध्वी विनयश्री जी	रतनगढ़
(१०)	साध्वी गुणमाला जी	भीलवाड़ा
(११)	साध्वी चंदनबाला जी	जालना
(१२)	साध्वी साधनाश्रीजी	बीदासर (समाधि केंद्र)
(१३)	साध्वी संयमश्री जी	सुजानगढ़
(१४)	साध्वी तिलकश्री जी	उचाना मंडी
(१५)	साध्वी सत्यप्रभा जी	जसोल
(१६)	साध्वी मंजुप्रभा जी	छोटी खाटू
(१७)	साध्वी कमलप्रभा जी 'बोरज'	पचपदरा
(१८)	साध्वी प्रशमरति जी	चूरू
(१९)	साध्वी अमितप्रभा जी	बीदासर (समाधि केंद्र)
(२०)	साध्वी मधुबाला जी	पेटलावद
(२१)	साध्वी सत्यवती जी	अमरनगर, जोधपुर
(२२)	साध्वी कुंथुश्री जी	जोधपुर शहर
(२३)	साध्वी मधुरेखा जी	विद्याधर नगर, जयपुर
(२४)	साध्वी सोमलता जी	कालबादेवी, मुंबई
(२५)	साध्वी शांताकुमारी जी	बोरावड़
(२६)	साध्वी प्रमोदश्री जी	बायतू
(२७)	साध्वी कनकरेखा जी	लालकोठी, बीकानेर
(२८)	साध्वी निर्वाणश्री जी	कांदिवली, मुंबई
(२९)	साध्वी संगीतश्री जी	किशनगंज
(३०)	साध्वी स्वर्णरेखा जी	उत्तर हावड़ा
(३१)	साध्वी संघप्रभा जी	अजमेर
(३२)	साध्वी लब्धिश्री जी	उधना
(३३)	साध्वी पुण्यप्रभा जी	तारानगर
(३४)	साध्वी मंगलप्रभा जी	राजलदेसर
(३५)	साध्वी जिनबाला जी	सरदारपुरा, जोधपुर
(३६)	साध्वी त्रिशला कुमारी जी	हैदराबाद
(३७)	साध्वी पावनप्रभा जी	हनुमानगढ़ टाउन
(३८)	साध्वी रतिप्रभा जी	असाड़ा
(३९)	साध्वी सोमयशा जी	माणसा, गुजरात
(४०)	साध्वी पीयूषप्रभा जी	कानपुर
(४१)	साध्वी शुभप्रभा जी	फरीदाबाद
(४२)	साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी	कोयंबटूर
(४३)	साध्वी कार्तिकयशा जी	इंदौर
(४४)	साध्वी मंगलप्रज्ञा जी	साहुकारपेट, चेन्नई
(४५)	साध्वी शशिरेखा जी	उदासर
(४६)	साध्वी उर्मिला कुमारी जी	बाडमेर
(४७)	साध्वी प्रतिभाश्री जी	लुधियाना
(४८)	साध्वी ललितकला जी	भीनासर
(४९)	साध्वी सूरजप्रभा जी	जोरावरपुरा
(५०)	साध्वी रचनाश्री जी	पीलीबंगा
(५१)	साध्वी मुक्तिश्री जी	सोजत रोड
(५२)	साध्वी पुण्ययशा जी	झकनावदा
(५३)	साध्वी मंजुयशा जी	कांकरोली
(५४)	साध्वी मानकुमारी जी (सर०)	मोमासर की ओर
(५५)	साध्वी कुंदनप्रभा जी	पड़िहारा की ओर
(५६)	साध्वी कनकश्री जी (राजगढ़)	सरदारशहर की ओर
(५७)	साध्वी प्रज्ञावती जी	सादुलपुर की ओर
(५८)	साध्वी गुप्तिप्रभा जी	सरदारशहर-नोहर की ओर
(५९)	साध्वी ललितप्रभा जी	बीकानेर की ओर
(६०)	साध्वी बसंतप्रभा जी	सरदारशहर की ओर
(६१)	साध्वी कुंदनरेखा जी	पंजाब की ओर
(६२)	साध्वी प्रसन्नयशा जी	पंजाब की ओर
(६३)	साध्वी सम्यक्प्रभा जी	चलथान
(६४)	साध्वी प्रज्ञाश्री जी	वसई
(६५)	साध्वी प्रमिला कुमारी जी	इचलकरंजी
(६६)	साध्वी जिनरेखा जी	ठाणा-मुंबई
(६७)	साध्वी मधुस्मिता जी	बीड-महाराष्ट्र
(६८)	साध्वी लावण्यश्री जी	ईरोड, सेलम की ओर
(६९)	साध्वी शिवमाला जी	राजराजेश्वरी नगर-बैंगलोर
(७०)	साध्वी विद्यावती जी	भायंदर-मुंबई
(७१)	साध्वी कैलाशवती जी	वाशी-मुंबई
(७२)	साध्वी काव्यलता जी	पूना
(७३)	साध्वी कंचनप्रभा जी (सुजानगढ़)	हिरियूर
(७४)	साध्वी गवेषणाश्री जी	मंडया

समणी केंद्र

(१)	समणी निर्वाणप्रज्ञा जी	झाबुआ

समणी केंद्र विदेश

(१)	समणी मलयप्रज्ञा	ह्यूस्टन
	समणी नीतिप्रज्ञा	
(२)	समणी चैतन्यप्रज्ञा	मियामी
	समणी हिमप्रज्ञा	
(३)	समणी प्रतिभाप्रज्ञा	लंदन
	समणी पुण्यप्रज्ञा	

खुला मंच प्रश्न प्रतियोगिता

एरोली।

साध्वी कैलाशवती जी के सान्निध्य में खुला मंच प्रश्न प्रतियोगिता का कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन, एरोली में आयोजित हुआ। साध्वीश्रीजी द्वारा नवकार मंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। साध्वी पंकजश्री जी एवं साध्वी शारदाप्रभाजी ने एक-एक करके सभी से धार्मिक प्रश्न पूछे। उपस्थित सभी भाइयों एवं बहनों ने इस प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

अंत में प्रतियोगिता का रिजल्ट तेयुप अध्यक्ष गौतम चंडालिया द्वारा निकाला गया। जिसमें प्रथम स्थान पर जयंत कोठारी एवं देवेंद्र बोहरा, द्वितीय स्थान पर धीरज बोहरा, तृतीय स्थान पर यस्शवी सिंघवी, प्रकाशदेवी सोनी, हेमा कोठारी, मुकेश बेताला, वियाना, अंकिता सिंघवी, मांगीलाल बोहरा, छोगालाल सोनी रहे। सभी को साध्वीश्रीजी के सान्निध्य में पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं तेरापंथ समाज के सभी सम्मानित सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

अमृत महोत्सव पर विशेष

वर्धापना में शासन माता को भावों का उपहार

❑ **साध्वी मलयप्रभा** ❑

अमृतोत्सव मनोनयन का, गण आँगन त्योहार है
सति शेखरे महाश्रमणी की, गूंजे जय-जयकार है,
वंदे श्रमणी वरं, वंदे सतीवरम्----

जन्म लिया कलकत्ता भू पर, कला नाम सूखकर सुंदर
चंदेरी की पुण्य धरा पर संस्कारित बहार भीतर
गण मुक्ता से भरा हुआ,
तेरे जीवन का ये समंदर
अर्हताओं के अंकन में,
चढ़ गई कनक कसौटी पर
श्री तुलसी से अभिमंडित तुम,
अष्टम पट अधिकार से
वंदे श्रमणी वरं, वंदे सती वरं

करें आरती शुभ भावों की, मंगल थाल सजाते हैं
भव्य भाल पर अक्षत कुंकुम, केसर तिलक लगाते हैं
अर्चन में आस्था के श्रीफल, रोली मोली सजाते हैं
घर-घर नंदा दिप जले, हैं नंद्यावर्त रचाते हैं
महा अभिषेक समंदर करता, भर-भर कलश अपार है।
वंदे श्रमणी वरं, वंदे सती वरं

समता, सेवा, विनय, समर्पण, की प्रतिमूर्ति सुखदाई
दूज चाँद ज्यों गरिमा महिमा, दिन दुनी बढ़ती पाई
गुरु भक्ति है रोम-रोम में, फर्क नहीं राई पाई
तीन-तीन गुरुओं की दृष्टि में, नंबर वन कहलाई
गण निष्ठा, मर्यादा निष्ठा, गुरु आज्ञा गलहार है।
वंदे श्रमणी वरं, वंदे सती वरं।

जीवन का हर पन्ना तेरा, जीने का विज्ञान सिखाएँ
श्रम की अकथ कहानी तेरी, वसुंधरा का कण-कण गाए
प्रवचन का हर लब्ज तुम्हारा, श्रोता को सरसब्ज बनाएँ
भक्त हृदय तेरी सन्निधि में माँ जैसी ममता पाए।
पा नेतृत्व सलौना तेरा, महके गण मंदार है।

वर्धापन में शासन माता भावों का उपहार है
रहो निरामय युग-युग जिओ उर उर की पुकार है
विनय प्रणत हम रहे चरण में भर दो ये संस्कार है
पूर्ण सदी पर लगे कुंभ का मेला यह मनुहार है
असाधारण छावँ रहे श्री महाश्रमण दरबार में।।

लय : आओ बच्चो---

✦ *साधक को स्वर्ग प्राप्ति की नहीं, मोक्ष प्राप्ति की कामना करनी चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

सेवा कार्य

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप की ओर से गुरुकुल विद्यापीठ, केंगेरी में ८० बच्चों तथा उनकी देखभाल करने वालों को नाश्ता करवाया तथा जरूरत की राशन सामग्री का वितरण किया गया। इस सेवा कार्य के प्रायोजक हनुमानमल संजय कुमार बैद परिवार थे। सर्वप्रथम नवकार मंत्र से इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई, इस सेवा कार्य में उपाध्यक्ष धर्मेश नाहर, सहमंत्री बरुण पटावरी, सेवा कार्य प्रभारी, दीपक गोठी, सहप्रभारी सुपार्श्व पटावरी, कार्यसमिति सदस्य बिकास छाजेड़ आदि उपस्थित थे।

परिवार ने सेवा कार्य की सराहना करते हुए कहा कि समाज में किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति के काम आना सबसे बड़ा महान परोपकारी कार्य है। हर किसी को दीन-दुःखी की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। परिषद उपाध्यक्ष धर्मेश नाहर ने वहाँ उपस्थित सभी बच्चों को जैन धर्म के बारे में जानकारी दी तथा बैद परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर।

तेयुप, जयपुर के पूर्व मंत्री स्वर्गीय सत्येंद्र जेन की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर राजमल देवेंद्र कुमार जैन महारानी फार्म के सौजन्य से सीतापुर स्थित कॉम्यूकॉम में आयोजित रक्तदान शिविर में ७१ यूनिट रक्तदान एकत्रित हुआ।

परिषद परिवार ने अपने साथी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मानवता की सेवा के लिए रक्तदान शिविर का आयोजन किया, जिसमें तेयुप जयपुर के सेवाभावी अध्यक्ष राजेश छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष श्रेयांस पारख, संगठन मंत्री प्रवीण जैन, सदस्य लोकेश जैन, दीपक जैन के साथ इनके भाई देवेंद्र कुमार जैन व गजेंद्र जैन, पुखराज जैन के साथ अन्य पारिवारिक सदस्यों ने भी रक्तदान किया।

परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने बताया कि इस शिविर में तेयुप, जयपुर के परामर्शक युवक रत्न दलपत लोढ़ा, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य सुबोध पुगलिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगाणी सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया।

परिषद के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि शिविर की संयोजना में संयोजक दीपक भंसाली, सह-संयोजक प्रवीण भूतोड़िया, वरुण बरड़िया सहित अन्य तेयुप सदस्यों के सहयोग से शिविर में रक्त का संग्रहण संतोकबा दुर्लब जी ब्लड बैंक के द्वारा किया गया।

स्वच्छता अभियान

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल दोनों ने मिलकर संयुक्त रूप से सेवा कार्य स्वच्छता अभियान का कार्य शक्ति साधना केंद्र (आश्रम), खेयादह में किया। सेवा कार्य के अंतर्गत आश्रम के बच्चों को स्टेशनरी किट एवं स्कूल बैग का वितरण किया गया। वृक्षारोपण के कार्य में लगभग डेढ़ सौ पौधों को लगाया गया एवं स्वच्छता अभियान के अंतर्गत बाल्टी, मग, साबुन इत्यादि वस्तुओं का वितरण किया गया। तेयुप एवं तेकिमं की उपस्थिति सभी सदस्यों ने बड़े उत्साह के साथ तीनों कार्य को संपादित किया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र एवं लोगस्स के पाठ का ध्यान किया। इसके पश्चात सेवा कार्य, वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान के कार्य को पूरा किया गया।

कार्यक्रम में परिषद के उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र बुच्चा, सहमंत्री-द्वितीय राजीव खटेड़, संगठन मंत्री नवीन दुगड़, परिषद के संस्थापक अध्यक्ष रतनलाल श्यामसुखा, कार्यकारिणी समिति सदस्य एवं अभातेयुप सदस्य अजय पींचा सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रायोजक संजय अग्रवाल (प्रोफाइल इंटरनेशनल) थे।

सार-संभाल : संगठन यात्रा

उत्तर हावड़ा।

तेयुप, उत्तर हावड़ा पदाधिकारियों द्वारा अभातेयुप द्वारा निर्देशित सार-संभाल साथियों की : संगठन यात्रा के तहत तृतीय दिवस युवा साथियों की सार-संभाल की गई। नवकार महामंत्र के सामुहिक जाप से सार-संभाल यात्रा का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात अध्यक्ष प्रवीण कुमार सिंघी ने उपस्थित सभी साथियों का स्वागत करते हुए परिषद के कार्यों के बारे में जानकारी दी और सभी साथियों ने अपना-अपना परिचय दिया। मंत्री विनीत कोठारी ने साथियों को अभातेयुप के आयामों की जानकारी दी।

तृतीय दिवस, तीन तेयुप सदस्यों– चंचल आंचलिया, शक्ति आंचलिया, प्रतीक बैद की सार-संभाल की गई और एक तेयुप–विनीत भंसाली एवं एक तेरापंथ किशोर मंडल चिराग भंसाली के नए सदस्य के रूप में फार्म भरवाया गया। दोनों सदस्य पिता-पुत्र की जोड़ी हैं। सभी साथियों को युवावाहिनी एवं अन्य आयामों से जुड़ने हेतु प्रेरणा दी गई।

प्रभु महाश्रमण तुम मेरे अंतर के राम हो

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

साध्वीप्रमुखाश्रीजी का अपार स्नेह एवं कृपादृष्टि साध्वी चंद्रिकाश्रीजी के भीतर ऊर्जा का संचार कर रही थी। श्रद्धेया महाश्रमणीजी प्रतिदिन पधारते और सेवा करवाते। कभी-कभी वे तीन-चार बार पधार जाते। साध्वीप्रमुखाश्रीजी बार-बार हम साध्वियों को पुछवाते रहते–चंद्रिकाश्रीजी कैसे हैं? जरूरत है तो मैं आऊँ। साध्वीप्रमुखाश्रीजी कभी वैराग्यपरक, स्तुतिपरक ढालें सुनवाते, कभी उन्हें दोहें सिखाते, कभी जप करवाते, कभी छोटे-छोटे प्रश्न पुछवाते, कभी इतिहास की बातें बताते, कभी ग्रास दिलवाते, कभी विनोद करवाते आदि। साध्वीप्रमुखाश्रीजी जब सेवा करवाते तो ऐसा लगता मानो उनके भीतर के रसायन ही बदल रहे हैं। वे अतिरिक्त आनंद एंव चित्त समाधि का अनुभव करती। वंदनीया मुख्य नियोजिका जी प्रतिदिन प्रायः मध्याह्न में पधारते। उन्हें जप के साथ विशेष रूप से आध्यात्मिक प्रेरणा दिलवाते। मुख्य नियोजिकाजी की प्रेरणाएँ उनके चिंतन को आध्यात्मिक संपोषण देती। आदरणीय साध्वीवर्याजी भी प्रतिदिन आराधना की ढाल सुनाने पधारते। दिन-भर साध्वियों का समागम एवं उनकी शुभकामनाएँ उन्हें आह्लादित करती ।

हमने अनुभव किया कि उन्हें इतनी, चारों ओर से संवेदनाएँ, शुभकामनाएँ प्राप्त हो रही थीं कि जिससे वे वंदना की अनुभूति में नहीं गई। वे परम समाधि का अनुभव कर रही थीं। उनकी आत्म-जागृति और आंतरिक समाधि का ही परिणाम था कि दिनांक १२ नवंबर को रात्रि में (जयपुर आने से पूर्व) अर्हत वंदना के बाद उन्होंने कहा–मुझे साध्वीप्रमुखाश्रीजी की सेवा करनी है। आलोयणा करनी है। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्रीजी निवेदन करते ही तत्काल पधारे उन्हें आलोयणा करवाई। वे पूरी शक्ति और जागरूकता के साथ स्थान-स्थान पर 'तत्स मिच्छामि दुक्कड़ं' का उच्चारण कर रही हैं। वे आराधक पद के लिए सदैव जागरूक थी। आलोयणा करके वे बहुत हल्केपन का अनुभव कर रही थी। साध्वी चंद्रिकाश्रीजी की जागृत चेतना हमारे लिए विशेष प्रेरणा है।

साध्वी चंद्रिकाश्रीजी का मेरे ऊपर अतिरिक्त उपकार है। वे हमारे वर्ग की जिम्मदार साध्वी थी। वे बड़ी कुशलता से जिममेदारियों का निर्वहन करतीं। उन्होंने मुझे हर दृष्टि से पूर्णतः निश्चिंत रखा। वे मुझे अध्ययन, जीवन-निर्माण, व्यक्तित्व विकास आदि दृष्टियों से बहुत ज्यादा प्रेरित करती थी। अभी प्रतिपल पग-पग पर उनकी कार्यकुशलता, उनकी निश्छलता, उनकी वैराग्य भावना, उनकी श्रमशीलता, उनकी गुण ग्राहकता, उनकी कृतज्ञ भावना स्मृति पटल पर तैरती रहती है और संप्रेरित करती रहती हैं। उनका सहवास चिरस्मरणीय है। वह पवित्र आत्मा जहाँ भी है समुत्थान करती रहे। अंतहीन कृतज्ञता एवं शुभाशंसा के साथ----

(समाप्त)

वृहद उपनगरीय कार्यशाला

परचम केसरिया शक्ति का एवं संगठन यात्रा का आयोजन

कोलकाता।

अभातेममं के तत्त्वावधान में उपनगर क्षेत्र के लिलुआ, बॉली-बेलुड़, उत्तरपाड़ा, हिंदमोटर, रिसड़ा के महिला मंडल की सामुहिक कार्यशाला परचम-केसरिया शक्ति का और राष्ट्रीय अध्यक्ष की संगठन यात्रा रिसड़ा क्षेत्र के सेवक संघ में आयोजित की गई।

अभातेममं से पधारी हुई पूरी टीम का स्वागत, तिलक लगाकर एवं माला पहनाकर किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, पश्चिम बंगाल प्रभारी रमण पटावरी और सोनम बागरेचा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बबीता भूतोड़िया, अनुपमा नाहटा, राष्ट्रीय एसोसिएट संगीता बाफना आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। महिला मंडल की मंत्री सुनीता सुराणा के ३१५वें एकासन तप के उपलक्ष्य में उनका सम्मान किया।

संघ सेवा सदन के प्रवेश द्वार पर हिंदमोटर कन्या मंडल द्वारा परचम केसरिया शक्ति की थीम पर सुंदर रंगोली बनाकर पूरी टीम का स्वागत किया गया। इस रंगोली में नारी शक्ति के विभिन्न रूपों को दर्शाया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया के द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार के साथ हुआ। इसके पश्चात उपनगर क्षेत्र के महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया। उपनगर क्षेत्र के सभी अध्यक्ष और मंत्री बहनों ने स्वागत गीतिका से पूरी अभातेममं की बहनों का मन मोह लिया। उपनगर क्षेत्र के उत्तरपाड़ा से अध्यक्ष कुसुम नाहटा ने स्वागत वक्तव्य दिया। हिंदमोटर से कन्या मंडल की कन्याओं ने नारी शक्ति विषय पर नाटिका प्रस्तुत की। हिंदमोटर की अध्यक्ष समता गिड़िया ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने भाव व्यक्त किए। रिसड़ा से कन्या मंडल की बहनों ने गीतिका के माध्यम से स्वागत किया। रिसड़ा के अध्यक्ष सूर्या महनोत ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए विचारों की अभिव्यक्ति दी। कोणनगर से मंजु आंचलिया ने सभी अतिथियों का स्वागत कर हस्तनिर्मित कलाकृति राष्ट्रीय अध्यक्ष को भेंट की। पं० बंगाल प्रभारी रमण पटावरी ने सभी अतिथियों को एवं उपनगर क्षेत्र के अध्यक्ष एवं मंत्री का परिचय देते हुए उनके कार्यों की सराहना की। सभी क्षेत्रों के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने सभी उपनगीय क्षेत्रों के प्रति शुभकामना व्यक्त की।

संगठन यात्रा का दूसरा चरण

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने 'परचम-केसरिया शक्ति का' के महत्त्व को बताते हुए कहा कि विश्व में एकमात्र हम तेरापंथ महिला मंडल का यह केसरिया गणवेश पिछले ५० वर्षों से एकरूपता के साथ निरंतर चलता आ रहा है। इसके साथ नारीलोक में संपादित कार्यक्रम के बारे में बताते हुए उन्हें यथासमय निष्पादित करने की प्रेरणा दी। इसी के साथ बहनों की जिज्ञासाओं को उदाहरण द्वारा समाहित किया। कार्यक्रम का संचालन बॉली-बेलुड़ की मंत्री अंकिता लुनिया और रिसड़ा क्षेत्र की मधु महनोत द्वारा किया गया। उपनगर के सभी क्षेत्रों की मंत्रियों ने मिलकर अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने उपनगर के सभी क्षेत्रों के श्रम की अनुमोदना व सराहना करते हुए अभातेममं की ओर से प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। हिंदमोटर की मंत्री विनीता मालू व रिसड़ा की मंत्री सुनीता सुराणा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। लिलुआ से मंत्री सुनीता बैद ने सभी अतिथियों एवं गणमान्य सदस्यों का स्वागत करते हुए आभार ज्ञापित किया। केसरिया परिधान में सज्जित १०० बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

जीवन में पदार्थों के प्रति रागात्मक मोह नहीं रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, १५ फरवरी, २०२२

अध्यात्म जगत के महान सूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने आसक्ति और अनासक्ति को एक उदाहरण से समझाने का व्यावहारिक प्रयास किया है कि आसक्ति और अनासक्ति कैसी होती है?

एक उदाहरण से समझाया कि जैसे एक मिट्टी के सूखे गोले को दीवार पर फेंकते हैं, तो वह दीवार से टकराकर नीचे गिर जाता है, पर एक गीली मिट्टी के गोले को दीवार पर फेंका जाए तो वह दीवार पर चिपक जाता है। आसक्ति आद्र मिट्टी और अनासक्ति शुष्क मिट्टी के गोलक के समान है।

हम शरीरधारी हैं, शरीर को टिकाने का प्रयास भी किया जाता है। प्रवृत्ति भी होती है। प्रवृत्ति करेंगे तो क्या बंधन नहीं होगा? प्रवृत्ति के बिना जीवन चलना भी मुश्किल है। इसके बीच का मार्ग है—अनासक्ति। पदार्थों में अनासक्ति रखो। व्यक्तियों में भी अवांछनीय आसक्ति मत रखो। इतना सा क्रम हो जाए तो बंधन से काफी बचाव हो सकता है।

मन भी मनुष्यों के बधन का कारण बनता है। मन ही मुक्ति का कारण बनता है। विषयासक्त मन बंध कराने वाला होता है। विषयमुक्त मन मुक्ति दिलाने वाला होता है। मन को भाव भी माना जा सकता है।

हमारा धर्मसंघ व्यवस्थापक रूप से अनासक्ति को प्राप्त है। कारण शिष्य प्रथा नहीं है, हमारे पास जो भी उपकरण है, वो भी मेरे नहीं है। पद का उम्मीदवार नहीं बनना। वो भी अहंकार से बचने का प्रयास हो गया है। संघ में कोई है, तो हमारा धार्मिक संबंध है, पर संघमुक्त होने पर वह संबंध भी नहीं रहता है। हमारे जीवन में पदार्थों के प्रति रागात्मक मोह नहीं रहे।

साधु के तो खुला बारणा रहे। गीत के पद्य का सुमधुर संगान किया। हाथ में माला और मुँह में बात हो। जिस समय जो अपेक्षा हो कर लें। जीवन में खुलापन हो। अनासक्तता हमारी साधना की एक महत्त्वपूर्ण चीज है। हम सब यात्री हैं। साधना के साथ परोपकार का काम करते रहें। गुरुकुलवास का साझ हो या सिंघाड़ा रीढ़ की हड्डी बनकर रहे। सेवा भावना से साथ वालों को संभालते रहें। मुनि हेमराजजी स्वामी व मुनि जीत के घटना प्रसंग को समझाया। अग्रणी-सहवर्ती का संबंध ऐसा हो।

हम सबमें अनासक्ति का भाव रहे, व्यवहार भी अच्छा रहे। सेवा का भाव रहे। सिंघाड़े-साझ की व्यवस्था अच्छी रहे। इतना हम ध्यान रखें, यह काम्य है।

आज चतुर्दशी है, पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करवाते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। अच्छा प्रतिक्रमण करना ऊँची साधना है। आत्मा का स्नान करें। ये चारित्र को शुद्ध रखने वाले होते हैं। आलोयणा की कामना मन में रहे। आलोयणा का आधार है, ऋजुता।

पाँचों मर्यादाएँ हमारे धर्मसंघ के स्तंभ हैं। केवली जाने वही सत्य है। संघ की मान्यता को स्वीकार करें। सुगम मध्य मार्ग से चलें। चित्त समाधि रखें। कोई साधु-साध्वीगण दलबंदी न करें। छल-कपटपूर्वक गण में न रहें। सबमें सौहार्द अच्छा रहे।

छोटे संतों ने लेख पत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने तीन-तीन कल्याणक बख्शीश करवाए। सामुहिक लेख पत्र का वाचन हुआ। पूज्यप्रवर ने १० वर्ष के संयम पर्याय या बीस वर्ष की उम्र वाली साध्वियों को आगे बुलाकर प्रेरणा प्रदान करवाई। सभी को तीन-तीन कल्याणक बख्शीश करवाए। बीदासर नगरपालिका के सदस्यों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर धन्यता का अनुभव किया। पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया गया।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि बीदासर नगर में शांति रहे। लोगों में मैत्री भाव रहे। नशे से लोग मुक्त रहने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि सरकार की गाईड लाइन आ गई है। कल से पूज्यप्रवर का प्रवचन श्रावक समाज के समूह रूप में हो सकेगा।

समस्याओं के समाधान के लिए महत्त्वपूर्ण है...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आदमी सुखी रहे, वर्तमान में संतुष्ट रहे। यह एक घटना प्रसंग से समझाया कि जो जीना जानता है, उसे मारने का अधिकार किसी को नहीं है। विरोध हो सकता है, प्रतिकूलताएँ आ सकती हैं, फिर भी आदमी समता-शांति में रहे। 'जो हमारा हो विरोध, हम उसे समझें विनोद' यह चिंतन का काफी प्रशस्त स्तर है। नकारात्मक चिंतन में व्यर्थ न जाएँ।

दुनिया में कई स्थितियाँ हैं, मानो अच्छे के लिए होती हैं। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि जो प्राप्त है, उसमें संतुष्ट रहकर समता-शांति से रहें। जो नहीं है, उससे दुःखी न बनें। आदमी का चिंतन का तरीका अच्छा हो तो निष्पत्ति भी अच्छी आ सकती है। आदमी सुख-शांति में रह सकता है।

बीदासर में हम मर्यादा महोत्सव के आयोजन के संदर्भ में आए थे। वह कार्य अच्छी तरह संपन्न हो गया। संतोषपूर्ण प्रवास संपन्न हो रहा है। समाधि केंद्र में मर्यादा महोत्सव का आयोजन होना विशेष बात है। बीदासर की जनता में भी खूब धर्म की अच्छी भावना बनी रहे। चतुर्मास की आगे प्रतीक्षा रखो। चतुर्मास करने का मेरा मनोभाव भी है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में कन्हैयालाल गिड़िया, कन्हैयालाल पटावरी, तेरापंथ सभा बीदासर के अध्यक्ष अशोक बोथरा, प्रेरणा जैन, लक्ष्मीपत बोथरा, अदिति शेखाणी, नवनीत बांठिया, बच्छराज बैंगानी, रूपचंद दुगड़ ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। जीतो चेयरमैन गणपत चौधरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। भाजपा जिला अध्यक्ष प्रतिभा घनावत ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। बीदासर की तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, सूरजमल बैंगाणी, बीदासर परिषद, भावना-भाग्यश्री छाजेड़, तेरापंथ सभा, अनिशा बैद, मनोज नाहर ने गीतों की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर ने व्यवस्था दायित्व स्थानांतरण कर फरमाया कि बीदासर का दायित्व भीलवाड़ा से चल रहा है। अब आगे दिल्ली जाने का लक्ष्य है। बीदासर के दायित्व संपन्नता के संदर्भ में और दिल्ली वालों के दायित्व ग्रहण के संदर्भ में आध्यात्मिक भावना के रूप में मंगलपाठ की कृपा करवाई। जीतो भी जैन समाज की एक बहुत महत्त्वपूर्ण, गरिमापूर्ण, सक्षम संस्था प्रतीत हो रही है। जीतो के द्वारा भी धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा होती रहे। बीदासर का भी नैतिक विकास होता रहे।

बीदासर वासियों की ओर से दायित्व ध्वजा स्थानांतरण करते हुए दिल्ली वालों को सुपुर्द किया। अहिंसा यात्रा समापन बैनर का अनावरण किया गया। उपासक महावीर दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

त्याग, तपस्या और संयम का मूल लक्ष्य है...

(पृष्ठ १२ का शेष)

मोहनीय कर्म भाव जगत का एक मूल तत्त्व है। भाव जगत मोहनीय कर्म के औदारिक भाव और उपशम, क्षय, क्षयोपशम भाव से निष्पन्न होता है या जुड़ा हुआ है। मोहनीय कर्म का उदय भाव और उसका विलय, इन दोनों में युद्ध सा भी कई बार चलता है। कभी उदय भाव बलवान बन जाता है, तो कभी मोहनीय विलय बलवान बन जाता है। ज्यों-ज्यों मोहनीय कर्म प्रबल होता है, त्यों-त्यों आदमी का स्वभाव, व्यवहार, आचार, रहन-सहन दुष्प्रभावित हो जाता है।

ज्यों-ज्यों मोहनीय कर्म हल्का पड़ता है, तो हमारे संस्कार, हमारा व्यवहार, आचार, हमारा चित्त सुप्रभावित होते जाते हैं। सद्भाव, मोहनीय कर्म के विलय से प्राप्त होते हैं। असद् या दुर्भाव मोहनीय कर्म के उदय से निष्पन्न होते हैं। यह संघर्ष संपूर्णतया तो आगे के गुणस्थानों में विराम को पाता है।

आठ कर्मों में सेनापति या राजा मोहनीय कर्म होता है। जैसे शरीर में शीश का जो स्थान होता है, वैसे ही मोहनीय कर्म का कर्मों में होता है। मोहनीय कर्म नहीं रहेगा फिर ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय कर्म विशेष आगे नहीं रहेगा। शेष चार अघाति कर्म तो बहुत भले हैं। जैसे खरगोश हो, आत्मा को इनसे खतरा नहीं है।

मोहनीय कर्म से बड़ा खतरा है। यह चंडकौशिक सर्प के समान है। चित्त शुद्धि के लिए मोहनीय कर्म को हल्का करना और एक दिन क्षय को प्राप्त करा देना होता है। हमारे जीवन में शरीर, वाणी और मन भी है। कर्म के बंधन में मन की बड़ी सक्षम भूमिका प्रतीत हो रही है। मन-चित्त निर्मल, शुद्ध रहे। भाव शुद्ध रहे यह अपेक्षा है। भावों से आदमी नरक या स्वर्ग में जाने के कर्मों का भी अर्जन कर लेता है। मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। जैसी भावना होती है, वैसी ही सिद्धि हो जाती है। ध्यान भी चित्त शुद्धि के लिए हो। प्रेक्षाध्यान का उद्देश्य भी यही है। जीवन विज्ञान व अणुव्रत भी कुछ अंशों में चित्त शुद्धि के लिए होते हैं। हम सब चित्त शुद्धि को ऊँचाई की ओर ले जाने का प्रयास करें। कषायमंदता, कषाय विजय में गति हो। यह साधना का मूल तत्त्व है। आत्मा पर जो मोहनीय कर्म की गंदगी आई हुई है, उसे कषायमंदता से दूर करें। आत्मा तो अपने आपमें शुद्ध ही है।

स्वर्ण को अग्नि की प्रक्रिया से उसके मूल रूप को उजागर कर लिया जाता है, इसी प्रकार तपस्या-साधना के द्वारा चेतना के मूल स्वरूप को उभारा जा सकता है। शरीर को शुद्धि का व्यवहार की दृष्टि से कुछ मूल्य हो सकता है, पर चेतना की शुद्धि का बहुत-बहुत महत्त्व होता है। त्याग, तपस्या और संयम का मूल लक्ष्य है, चित्त शुद्धि। हमारी चित्त शुद्धि का प्रयास होता रहे और दूसरों की चित्त शुद्धि में जितने सहयोगी बन सकें, हमारे लिए अच्छी बात हो सकती है। कई वर्षों के बाद बीदासर में इतना बड़ा समागम हुआ है। गुरुकुलवास का दायरा विशाल हो गया। अब धीरे-धीरे विहार हो रहा है। हम जहाँ भी रहें, हमारी चित्त शुद्धि की साधना बढ़ती रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में पुष्पा बैंगाणी, ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी।

साध्वी प्रणवप्रभाजी, साध्वी भव्ययशाजी ने भी अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 फरवरी - 6 मार्च, 2022

✦ *मन हमेशा शुद्ध रहे और उसमें राग-द्वेष का भाव न आए तो कल्याण निश्चित है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

'मंत्री' मुनि सुमेरमल जी की जीवनी 'पुण्यात्मा' का लोकार्पण

त्याग, तपस्या और संयम का मूल लक्ष्य है चित्त शुद्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, १२ फरवरी, २०२२

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा प्रदाता 'शासन स्तंभ' मंत्री मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी 'लाडनूं' के जीवन-वृत्त 'पुण्यात्मा' का लोकार्पण आचार्यप्रवर के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि पुण्यात्मा शब्द ही गरिमापूर्ण है। मुनिश्री के सरदारशहर चातुर्मास में उन्हीं के द्वारा मुझे और उदितकुमार जी को गुरुदेव तुलसी के निर्देशानुसार दीक्षित होने का अवसर मिला। आचार्यप्रवर ने मंत्री मुनिश्री सुमेरमल जी की तुलना हेमराज जी स्वामी से करते हुए कहा कि कुछ अंशों में मंत्री मुनि हेमराज जी स्वामी की प्रतिकृति प्रतीत होते हैं। हेमराजजी स्वामी का अपना व्यक्तित्व था तो सुमेरमलजी स्वामी का भी अपना व्यक्तित्व था। दोनों ने तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा वृद्धि में अपना योगदान दिया था। आज के दिन धर्मसंघ में ऐसा कोई साधु-साध्वी नहीं है, जिसने चार पुरुषों को दीक्षा दी हो। उनका जीवन-वृत्त अपने आपमें महत्त्वपूर्ण है। मंत्री मुनिश्री मेरे दीक्षा प्रदाता, वैराग्य संपोषक, प्रशिक्षणदाता एवं संस्कारदाता थे। मुनि उदित कुमार जी को मंत्री मुनिश्री के सान्निध्य में रहने का मौका मिला। मुनि उदित कुमार जी में भी मंत्री मुनिश्री की विशेषताएँ दिखाई देती हैं। उन्हीं की तरह ज्योतिष विद्या, मुहूर्त प्रदान करने की क्षमता, व्याख्यान शैली, तत्त्व समझाने की क्षमता, बात करने का तरीका, तेरापंथ के सिद्धांतों को समझाने की कला है। इस प्रकार मंत्री मुनिश्री का व्यक्तित्व कुछ अंशों में उदित कुमार जी में दिखाई देता है। मंत्री मुनिश्री का जीवन-वृत्त सामने आना संतोष की बात है। इसके पठन से पाठकों को धार्मिक और आध्यात्मिक प्रेरणा मिलती रहे। आचार्यप्रवर ने मंत्री मुनिश्री की स्मृति में रचित गीत 'मंत्री मुनि का स्मरण करूँ' का मधुर संगान किया।

जीवन-वृत्त के लेखक मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि शासन स्तंभ मंत्री मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी तत्त्वज्ञ, आगम मर्मज्ञ, गंभीर चिंतक, दूरदर्शी, कुशल अनुशासक एवं पुण्यशाली व्यक्तित्व के धनी थे।

इस पुस्तक का नाम पुण्यात्मा इसलिए सार्थक है क्योंकि मंत्री मुनि ने जो कार्य हाथ में लिए वो सफलता को प्राप्त हुए। उन्होंने जितना श्रम किया उससे कई गुना सफलता उन्हें प्राप्त हुई। इस पुस्तक के लिए अगर किसी की प्रेरणा कहूँ तो वो परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की है। योगक्षेम वर्ष के पश्चात मंत्री मुनि की कोलकाता यात्रा के समय आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा कहे गए शब्दों की फलश्रुति यह मंत्री मुनि का जीवन-वृत्त पुण्यात्मा है। मंत्री मुनि से मुझे यह प्रेरणा मिली कि कृतज्ञता कैसे अभिव्यक्त होती है जो हमारे जीवन में माधुर्य को घोल देता है। मंत्री मुनि कहा करते थे कि जिसका पुण्य प्रबल हो उसके हर कार्य सफल होते हैं और पुण्य की प्रबलता तभी आएगी जब हमारी साधना और आराधना अच्छी चलेगी।

मुनि अनंत कुमार जी ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त की। मुनि उदित कुमार जी द्वारा लिखित इस पुस्तक को जैन विश्व भारती के कुलपति बच्छराज दुगड़, धर्मचंद लुंकड़, जीवनमल मालू, जीतमल जैन और कन्हैयालाल गिड़िया ने पूज्यप्रवर को जीवन-वृत्त की प्रति उपहृत की।

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि यह पुरुष अनेक चित्तों वाला होता है। आदमी की भावधारा में कई बार एक ही दिन में बहुत परिवर्तन आ जाता है। हमारे भीतर भावों का जगत है। सद्भाव भी है, तो असद्-भावों का मूल भी भीतर में है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दिल्ली प्रवास व्यवस्था समिति ने संभाला अहिंसा यात्रा का दायित्व

समस्याओं के समाधान के लिए महत्त्वपूर्ण है सकारात्मक चिंतन : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, १७ फरवरी, २०२२

बीदासर प्रवास का आज का अंतिम दिन। संयम के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगम वाङ्मय में एक आगम है—उत्तरज्झयणाणि जिसे हिंदी में उत्तराध्ययन कहा जाता है। अनेक साधु-साध्वियाँ इसे पूर्णरूपेण अथवा अंशरूपेण कंठस्थ भी करते हैं। स्वाध्याय के लिए अच्छा माध्यम यह आगम बन सकता है।

सारे सूत्रों को कंठस्थ करना मुश्किल लगे तो इसका दसवाँ, बत्तीसवाँ और उनत्तीसवाँ अध्याय तो कंठस्थ करना ही चाहिए।

इस आगम में अनेक प्रकार की बातें हैं। एक ओर जहाँ तत्त्व ज्ञान की बातें भी इस आगम में उपलब्ध होती है। ३६वाँ अध्ययन देख लें, २८वाँ भी देख लें। अध्यात्म साधना के दिशा निर्देश भी इस आगम के ३२वें अध्ययन में प्राप्त होते हैं। २९वें अध्ययन में घटना प्रसंग भी है। इस आगम का अर्थ भी ज्ञात हो और फिर हम उसका स्वाध्याय करें। एक विकास की दिशा में गति हो सकती है। हमारे पैर गति के मानो साधन हैं, तो हम गति-प्रगति करें। अध्यात्म की साधना में आगे बढ़ें।

साधु के २२ परिषह होते हैं, उनको सहने का सुंदर दिग्दर्शन इस आगम के दूसरे अध्ययन से प्राप्त किया जा सकता है। १०वें अध्ययन का एक चरण तो बार-बार रिपीट होता रहता है। थोड़े में एक प्रमाद से विरत रहने की प्रेरणा इससे प्राप्त की जा सकती है।

हमारे जीवन में प्रवृत्ति के ये तीन साधन हैं—मन, वचन और शरीर। मन तो भले दिखाई न दे पर वह चिंतन, मनन, स्मृति का माध्यम यह मन बनता है। मन से कई बार अनावश्यक चिंतन भी होता रहता है। कितना समय अनावश्यक चिंतन में बीतता होगा। सोचने की क्षमता का होना भी एक विकास का प्रतीक है।

दुनिया में अनंत प्राणी ऐसे हैं, जिनके पास सोचने की क्षमता ही नहीं है। वे दुनिया के अविकसित प्राणी हैं, जिनके पास वर्तमान में मन की उपलब्धि नहीं है। हमारे पास मन है, ये हमारे विकास का एक सक्षम प्रमाण है। इसका हमें गौरव है। ज्यादा धर्म वो ही प्राणी कर सकता है, जो मन वाला होता है। पुण्य और पाप दोनों काम मन वाला प्राणी करता है। अमनस्क प्राणी न तो ज्यादा धर्म कर सकते हैं और न ज्यादा पाप कर सकते हैं।

हम अपने मन को धर्म का साधन बनाएँ। जितना संभव हो, वह पाप का साधन न बन सके, ऐसा प्रयास करें। एक स्थिति वह भी आती है, जब आत्मा मनोनीत हो जाती है। मन से ऊपर उठ जाती है। ऊँचे विकास की बात है, परंतु मनस्वी होना, मनवान होना, मन वाला होना भी एक सीमा तक का विकास है।

मन से आदमी सोचता है। सोचना भी एक कलापूर्ण कार्य हो सकता है। कैसे सोचें? सोचने के भी अनेक तरीके, स्थितियाँ हो सकती हैं। सोचने का तरीका प्रशस्त हो, तो आदमी अच्छा सोच सकता है। सोचने का प्रशस्त तरीका है कि अनावश्यक विचार-चिंतन न हो इसका प्रयास करें। दीर्घश्वास का प्रयोग कर लें। चिंतन के समय आवेश में नहीं होना चाहिए। शांति रहनी चाहिए।

सोचना मेरा सही हो, उचित हो यह लक्ष्य रहना चाहिए। न्यायपूर्ण बात हो तो सोचने का निष्कर्ष अच्छा आ सकता है। चिंतन भी समय पर हो, दिन-भर नहीं। गुरुदेव तुलसी का कथन था—चिंता नहीं चिंतन करो। चिंता में दुःख का भाव हो सकता है। चिंतन में समाधान निकल सकता है। कई बार अचिंतन में से जो स्फूरणा होती है, उसका भी महत्त्व है। नवनीत निकलता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**